सितम्बर-२०२२ ◆ वर्ष ११ ◆ अंक ०६ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

सितम्बर-२०२२

आर्यावर्त्त हुआ पतनोन्मुख,
महाभारत के कारण।
किया कृष्ण ने पूर्ण परिश्रम,
इसका हो निस्तारण।
पाँच गाँव भी देने का जब,
दुर्योधन ने किया निषेध।
धर्मयुद्ध तब था आवश्यक,
करने दुष्टों को निःशेष।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹१५ १३०

अच्छी सोच
अच्छा खाना आपको स्वस्थ और कामयाब बनाता है।
MDH
मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच - सच
पद्मभूषण
महाशय धर्मपाल जी
संस्थापक चेयरमैन, एम.डी.एच. (प्रा०) लि०
Garam masala
Chunky Chat masala
Chana masala
Kitchen King
Shahi Paneer
PEACOCK
KASOORI METHI
Achari Aloo masala
अचारी आलू मसाला
Veg Biryani masala
वेज बिरयानी मसाला
Karahi Paneer masala
कड़ाही पनीर मसाला
DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER
For More Information Visit us on :
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
SpicesMdh
www.mdhspices.com
SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल
डॉ. महावीर मीमाँसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक
अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक
भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)
नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक
भँवर लाल गर्ग

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	11000 रु.	$ 1250
आजीवन	1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	600 रु.	$ 125
वार्षिक	150 रु.	$ 30
एक प्रति	15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२२
भाद्रपद शुक्ल द्वादशी
विक्रम संवत्
२०७९
दयानन्दाब्द
१९८

September - 2022

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)
पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) 3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) 2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम) 1000 रु.

समाचार २८
हलचल २९

०४	वेद सुधा
०६	सत्यार्थ मित्र बनें
११	अग्निवीर या अंग्रेजीवीर?
१२	भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक ......
१५	वेद एवं उसकी प्राचीनता ....
१७	ईश्वर स्थूल पदार्थ न होकर ....
१९	सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०७/२२
२०	अल्लूरी सीताराम राजू
२६	शिक्षा में संस्कृत अनिवार्य करें
२७	पत्नी अमृत फल के रूप में
३०	ईश्वर और ईश्वरकृत पुस्तक ......

स्वामी श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर
वर्ष - ११ अंक -०५
मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

कदु प्रचेतसे महे वचो देवाय शस्यते। तदिध्यस्य वर्द्धनम्।। – सामवेद पू. ३/१/४/२

महे प्रचेतसे – महान् ज्ञानी, सर्वज्ञ, **देवाय**– कमनीय प्रभु के लिए, **कत् उ**– थोड़ा-सा भी, **वचः शस्यते**– वचन [जो] कहा जाता है। **तत् हि**– वह सचमुच, **अस्य**– इस (स्तोता) का, **वर्धनम् इत्**– बढ़ानेवाला ही होता है।

व्याख्या

इस मंत्र में भगवान की स्तुति का फल बताया गया है। भगवान् का थोड़ा-सा भी स्तवन जीवों का कल्याणकारक होता है। आर्ष शास्त्रों में स्तुति-प्रार्थना-उपासना का बहुत विधान है। इनके स्वरूप के सम्बन्ध में संसार में बहुत भ्रम फैला हुआ है। इनका यथार्थस्वरूप न जानने के कारण लोग इन तीनों को व्यर्थ मानते हैं, अतः इन तीनों का थोड़ा-सा स्वरूप यहाँ वर्णन करते हैं– किसी वस्तु के गुणों को यथाशक्ति ठीक-ठीक जानकर उनका कीर्तन करना स्तुति है। उससे विशेष लाभ है। जीव का सारा यत्न सुख-प्राप्ति और दुःख-विनाश के लिए है। उसे ज्ञानी गुरु और वेदादि सत्य-शास्त्रों के स्वाध्याय से ज्ञान हुआ है कि आनन्द परमेश्वर में है। अपने में आनन्द के अभाव के कारण आनन्द की लालसा होती है और परमेश्वर में आनन्द की सत्ता के ज्ञान से वह भगवान् के इस गुण का कीर्तन करता हुआ उसकी प्राप्ति के लिए व्यग्र हो उठता है और रोकर कहता है–

कदान्वन्तर्वरुणे भुवानि। – ऋग्वेद ७/८६/२

'कब मैं सबसे श्रेष्ठ अन्तर्यामी के भीतर प्रवेश करूँगा?' अर्थात् कब मेरा संसार-पाश से छुटकारा होकर भगवान् से मेल होगा? अपने अन्दर इस अनुभव होनेवाली त्रुटि को दूर करने और उसके प्रतिपक्ष उत्तम गुण को प्राप्त करने की व्यग्रता का नाम

प्रार्थना है। उस व्यग्रता को दूर करने के साधनों के अनुष्ठान का नाम उपासना है। अब थोड़ा-सा ध्यान दीजिए, यदि स्तुति न की जाए, तो प्रार्थना और उपासना हो ही नहीं सकती। प्रार्थना-उपासना का बड़ा मूलाधार स्तुति है। स्तुति के कारण अपनी त्रुटि तथा उसके दूर करने के साधन ज्ञात होते हैं और उसी कारण मनुष्य प्रार्थना-उपासना में प्रवृत्त होता है। इसलिए वेद ठीक ही कहता है–

तदिद्ध्यस्य वर्धनम्। 'यह उसकी वृद्धि करनेवाला होता है।'

मानो इसी मन्त्र का अनुवाद करते हुए ही किसी ने कहा है–

प्रत्यवायो न विद्यते। 'इस क्रम की हानि नहीं होती।' वरन्–

स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्। 'इसका थोड़ा-सा भी अनुष्ठान बड़े भय से बचा देता है।'

भगवान् तो अत्यन्त कृपालु हैं, उसके अनन्त दान हैं, जैसाकि वेद में कहा है–

सहस्त्रं यस्य रातय उत वा सन्ति भूयसीः। 'जिसके सैकड़ों दान हैं, अथवा असीम दान हैं।'

हाँ, स्तुति आदि के लिए एक नियम है। वह यह कि–

न पापासो मनामहे नारायासो न जल्हवः। – ऋग्वेद ८/६१/११

'मन में पाप का भाव रखकर अथवा कंजूसी की वृत्ति से और झल्ले [सुकर्मरहित] होकर हम उसकी स्तुति आदि न करें।' अर्थात् किसी का अनिष्ट करने, किसी को हानि पहुँचाने आदि पापों की भावना से हमें भगवान् की स्तुति-प्रार्थनादि नहीं करनी चाहिए। वरन् दृढ़ निष्ठा और आस्था से स्तुति-प्रार्थना-उपासना करें। यदि उससे अभीष्ट सिद्ध न हो तो फिर भगवान् से यों कहें–

पृच्छे तदेनो वरुण। 'हे वरुण! मैं तुमसे अपना पाप पूछता हूँ।'

जब मनुष्य प्रभु के मार्ग (धर्म) पर चलने लगता है, तब उसे कई प्रलोभन आ घेरते हैं। उस समय साधक को यह प्रतिज्ञा करनी चाहिए-

महे चन त्वामद्रिवः परा शुल्काय देयाम्।
न सहस्त्राय नायुताय वज्रिवो न शताय शतामघ।। – ऋग्वेद ८/१/५

सब प्रकार की जीवन-सामग्री देनेवाले प्रभो! तुझे मैं किसी बड़े शुल्क के बदले भी न त्यागूँ, न सैकड़ों के बदले, न हजारों के बदले और हे अनन्त धनोंवाले। न ही लाखों के बदले।

नचिकेता के सामने जब प्रलोभन आये थे, तब नचिकेता= अपने ध्येय में सन्देह-रहित-नचिकेता ने कहा था-

श्वोभावा मर्त्यस्य यदन्तकैतत्सर्वेन्द्रियाणां जरयन्ति तेजः।
अपि सर्वं जीवितमल्पमेव तवैव वाहास्तव नृत्यगीते।।
न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यो ....।। – कठोपनिषद् १/१/२६,२७

ये विनाशी पदार्थ मनुष्य के इन्द्रियों के तेज को जीर्ण करते हैं। सारे संसार का आयु भी थोड़ा है, अतः नाच-गान, सवारी अपने पास रख। धन से मनुष्य की तृप्ति नहीं हो सकती।

जब ऐसी दृढ़ धारण हो जाए और साधक यह कह सके-

माहं ब्रह्म निराकुर्यां मा मा ब्रह्म निराकरोत्।

'परमेश्वर का मैं कभी त्याग न करूँ, क्योंकि परमेश्वर ने मेरा कभी परित्याग नहीं किया।'

तब साधक की वृद्धि में सन्देह ही क्या है, क्योंकि अब वह उसकी वृद्धि करनेवाले से मेल कर चुका है।

संसार के पदार्थ तो वास्तव में नीरस हैं, उनमें जो रस की प्रतीति हो रही है, वह प्रभु की व्याप्ति के कारण है। यदि भगवान् हमारा त्याग कर दें, तो हमें कभी भी किसी पदार्थ में रस प्रतीति न हो, अतः आओ भगवान् से मेल बनाये रखने के लिए उसकी स्तुति करें।

संसार के सकल पदार्थ जो हमने संगृहीत किये हैं, यही रह जायेंगे। कोई एक भी साथ नहीं जाएगा। साथ जाएगा केवल धर्म। धर्म का भाव-ईश्वर-पूजा है। स्तुति-प्रार्थना तथा उपासना के द्वारा त्यागपूर्वक भगवान् का आराधन ईश्वर-पूजा है। वह मुख्य धर्म है, वह मनुष्य का साथ देता है। जिसने उसका संचय नहीं किया, वह रीता होने के कारण अन्त समय पछताता है और वह भी पछताता है, जिसने धर्म के स्थान में अधर्म का संग्रह किया है। धर्म, शान्ति-सन्तोष का हेतु होता है। अधर्म से अन्त समय में बेचैनी और व्याकुलता का अनुभव होता है, दोनों एक-दूसरे के विपरीत जो हुए।

संकलन कर्त्ता एवं भाष्यकार- स्वामी वेदानन्द तीर्थ
साभार- स्वाध्याय-सन्दीप

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत

सत्यार्थ मित्र बनें

संस्कार वीथिकास्थ (चूड़ाकर्म संस्कार)

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है।

यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रूप से अनुगृहीत हूँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक– अशोक आर्य, अध्यक्ष–न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण :
AC. No. : 310102010041518,
IFSC CODE- UBIN 0531014,
MICR CODE- 313026001
में जमा करा कृपया सूचित करें।

जिन महानुभावों ने हमारे एक आग्रह पर न्यास को सम्बल प्रदान करने हेतु 5100 रु. (इक्कावन सौ) प्रतिवर्ष देकर सत्यार्थ मित्र बनना स्वीकार किया उनके चित्र को यहाँ हृदय से धन्यवाद प्रेषित करते हुए दे रहे हैं। बाकी साथियों के चित्र अगले अंक में दिए जायेंगे।

आर्य समाज, वैशाली नगर
जयपुर

डॉ. एस.के. माहेश्वरी
उदयपुर

श्रीमती नीता गर्ग
उदयपुर

श्री राजिन्दर तनेजा
दिल्ली

श्री विवेक चौहान
उदयपुर

श्रीमती पुष्पा अग्रवाल
आगरा

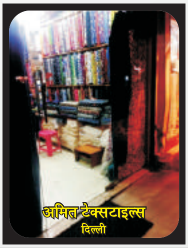
अमित टेक्सटाइल्स
दिल्ली

डॉ. गौरव गोम्बर
बीकानेर

आत्म निवेदन

ईश्वर ने मनुष्य की भाषा गड़बड़ाई? बाइबिल क्या कहती है

भारतीय मनीषा इस विषय में स्पष्ट है कि सृष्टि की आदि में जब मनुष्य की उत्पत्ति हुयी तब उसे ज्ञान दिया गया, जो अपरिहार्य था, क्योंकि मनुष्य योनि को स्वाभाविक ज्ञान न्यूनतम स्तर पर प्राप्त हुआ था। परन्तु नैमित्तिक ज्ञान मिलने पर उस ज्ञान में लगभग असीमित वृद्धि की सम्भावना थी। दूसरे शब्दों में कहें तो मनुष्य बिना सीखे कुछ नही अर्जित कर सकता। मानव अपने माता, पिता तथा आचार्य से ज्ञान प्राप्त करता है परन्तु आदि सृष्टि अमैथुनी थी, अतः उसे यह ज्ञान परमपिता परमात्मा ने दिया। वह जिस भाषा में दिया गया उसे वैदिक भाषा कहा जा सकता है, संस्कृत सहित संसार की अन्य भाषाएँ इसी से निकली हैं। विश्वभर के भाषा शास्त्री आज इस मान्यता से सहमत हैं। कुछ अन्तर के साथ संस्कृत इसके सर्वथा नजदीक है अतः संस्कृत को समस्त भाषाओं की जननी मान लिया जाता है।

एक विद्वान् लिखते हैं कि संस्कृत विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा है, यह विश्व की लगभग सभी भाषाओं की जननी है। उन्होंने संस्कृत तथा दूसरे शब्दों का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए यह साबित किया। उन्होंने मैक्समूलर का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि- संस्कृत के 'मूषः' (चूहा) शब्द को ग्रीक भाषा में मूस, लैटिन भाषा में 'मुस', पुरानी स्लावोनिक भाषा में 'माइस' और पुरानी उच्च जर्मन भाषा में 'मुस' कहा जाता है। इसी तरह संस्कृत में प्रयुक्त 'अग्निः' को लैटिन भाषा में 'इग्निस' तथा लिथ्वानियन भाषा में 'उग्निस' कहा जाता है। इसके अलावा संस्कृत के 'अस्मि' (मैं हूँ) को ग्रीक भाषा में 'एस्मि' कहने के साथ-साथ मैक्समूलर ने यूनानी व अन्य भाषाओं के साथ भी इसकी समरूपता को साबित करते हुए दर्जनों उदाहरणों द्वारा यह साबित कर दिया कि संस्कृत ही समस्त भाषाओं का उद्गम स्रोत है। आर्य जगत् की बात करें तो वर्त्तमान में दिल्ली के डॉ. पूर्ण सिंह डबास ने इस क्षेत्र में काफी कार्य किया है।

आज विश्व भर में ८० प्रतिशत से अधिक लोग सृष्टि उत्पत्ति के दैवीय सिद्धान्त से सहमत हैं। अथवा दूसरे शब्दों में कहें तो एक विशिष्ट सत्ता को Creator के रूप में मानते हैं, चाहे उसके स्वरूप, कार्यों और प्रकारों के बारे में उनमें गम्भीर मतभेद हों। सृष्टि की आदि में मनुष्यों को परमात्मा से ज्ञान की भी अपेक्षा सिद्ध है, अतः उसी एक ईश्वर ने ज्ञान दिया तो भाषा भी एक ही होगी यह भी स्वाभाविक है। यह जानना रुचिकर होगा कि वैदिक मत से भिन्न मतों में भाषा की उत्पत्ति के बारे में क्या कहा जाता है? क्या ये सभी मत संसार के प्रारम्भ में सबकी एक ही भाषा मानते हैं? वैदिक मत तो इसकी घोषणा करता ही है। इसके अतिरिक्त हम यहाँ बाइबिल की ही चर्चा करेंगे।

बाइबिल में एक अत्यन्त रोचक प्रकरण आता है जिसमें स्पष्ट रूप से यह स्वीकार किया है कि प्रारम्भ में लोग एक स्थान पर रहते थे और उनकी भाषा भी एक ही थी। आपस में मिल जुलकर उन्होंने काफी उन्नति कर ली थी। वे ईंटों को बनाना तथा पकाना जानते थे तथा उत्कृष्ट high rise buildings बनाने लग गए थे। यहाँ उस भाषा का नाम नहीं दिया गया है। परन्तु बाइबिल के उत्पत्ति प्रकरण अ.११ से स्पष्ट है कि सारा संसार एक ही भाषा बोलता था।

परन्तु अत्यन्त आश्चर्य यह है कि बाइबिल के अनुसार विभिन्न भाषाओं की उत्पत्ति एवं मनुष्य के migration में मुख्य

कारण ईश्वर बना, वह भी इस कारण से कि अगर ऐसा नहीं किया गया तो मनुष्य कहीं उसकी बराबरी न कर ले। यह ठीक वैसा ही है जैसा भारतीय अर्वाचीन कथाओं में इन्द्र को हर समय अपना सिंहासन हिलता दिखायी देता है। जब भी कोई महात्मा तपस्या करता है तो इन्द्र को अपना सिंहासन खतरे में दिखायी देता है और वह येन-केन-प्रकारेण उसकी तपस्या भंग करा देता है, ठीक ऐसा ही बाइबल के इस प्रकरण में दिखता है। पाठकों के लाभार्थ यह प्रकरण बाइबिल के उत्पत्ति प्रकरण से उद्धृत कर देते हैं।

अध्याय ११.१- बाढ़ के बाद सारा संसार एक ही भाषा बोलता था। सभी लोग एक ही शब्द समूह का प्रयोग करते थे।

११.२- लोग पूर्व से बढ़े। उन्हें शिनार देश में एक मैदान मिला। लोग वहीं रहने के लिए ठहर गए।

११.३- लोगों ने कहा, 'हम लोगों को ईंटें बनाना और उन्हें आग में तपाना चाहिए, ताकि वे कठोर हो जाएँ।' इसलिए लोगों ने अपने घर बनाने के लिए पत्थरों के स्थान पर ईंटों का प्रयोग किया और लोगों ने गारे के स्थान पर राल का प्रयोग किया।

११.४- लोगों ने कहा, 'हम अपने लिए एक नगर बनाएँ और हम एक बहुत ऊँची इमारत बनाएँगे जो आकाश को छुएगी। हम लोग प्रसिद्ध हो जाएँगे। अगर हम लोग ऐसा करेंगे तो पूरी धरती पर बिखरेंगे नहीं, हम लोग एक जगह पर एक साथ रहेंगे।'

११.५- यहोवा, नगर और बहुत ऊँची इमारत को देखने के लिए नीचे आया। यहोवा ने लोगों को यह सब बनाते देखा।

११.६- यहोवा ने कहा, 'ये सभी लोग एक ही भाषा बोलते हैं और मैं देखता हूँ कि वे इस काम को करने के लिए एकजुट हैं। यह तो, ये जो कुछ कर सकते हैं उसका केवल आरम्भ है। शीघ्र ही वे वह सब कुछ करने के योग्य हो जाएँगे जो ये करना चाहेंगे।

११.७- इसलिए आओ हम नीचे चलें और इनकी भाषा को गड़बड़ कर दें। तब ये एक दूसरे की बात नहीं समझेंगे।'

११.८- यहोवा ने लोगों को पूरी पृथ्वी पर फैला दिया। इससे लोगों ने नगर को बनाना पूरा नहीं किया।

११.९- यही वह जगह थी जहाँ यहोवा ने पूरे संसार की भाषा को गड़बड़ कर दिया था। इसलिए इस जगह का नाम बाबुल पड़ा। इस प्रकार यहोवा ने उस जगह से लोगों को पृथ्वी के सभी देशों में फैलाया।

बाइबिल के इस प्रकरण से निम्न बातें स्पष्ट होती हैं-

१. समस्त संसार आरम्भ में एक ही भाषा बोलता था।

२. लोग पूर्व से बढ़े और यह भी कि परमेश्वर उन्हें फैलाए उससे पूर्व ही migration प्रारम्भ हो चुका था। यह अवश्य था कि वे अभी साथ-साथ थे।

३. वे ईंट बनाना और तत्समय तक आग में तपाकर बनाना जान चुके थे, और अपने घर बनाने में पत्थरों के ऊपर ईंटों को वरीयता देने लगे थे।

४. उन्होंने शिनार के मैदान में अपने लिए नगर बनाना भी प्रारम्भ कर दिया। हो सकता है वे जहाँ से आ रहे थे वहाँ भी उन्होंने नगर या इस जैसा कोई प्रबन्ध किया हो।

५. बाइबिल के अनुसार तत्समय के लोग आकाश के तात्विक ज्ञान से वंचित थे। वे, जो ऊपर नीला-नीला दिखता है उसे ही आकाश मानते थे और उसकी ऊँचाई भी इतनी ही जानते/मानते थे कि वहाँ तक सीढ़ी बनायी जा सकती है और उस पर चढ़ा जा सकता है। दूसरा इस आयत में अनेकत्र नीचे चलें/उतरें का प्रयोग यहोवा द्वारा किया गया है। यह भी नितान्त अवैज्ञानिक है और ऐसा है जैसा हम चाँद पर जाने के लिए 'ऊपर चलें' या चाँद से पृथ्वी पर आने के लिए 'नीचें चलें' का प्रयोग करें। ऐसा कथन सामान्यतः तो किया जा सकता है परन्तु तात्विक रूप से नहीं।

६. वे सभी मनुष्य एक साथ रहना चाहते थे। धरती पर बिखरना नहीं चाहते थे।

७. उनके नगर निर्माण तथा सीढ़ी निर्माण को देखने परमेश्वर को नीचे आना पड़ा। अर्थात् बाइबिल का ईश्वर सर्वव्यापक नहीं है। आगे की आयत 'आओ हम नीचे चलें' से भी यही प्रमाणित हो रहा है। यहाँ 'हम' का प्रयोग होने से यह स्पष्ट होता है

कि ईश्वर के अतिरिक्त और भी एक या अधिक जन थे जिनकी मनुष्यों द्वारा निर्मित मीनार तोड़ने में ईश्वर को सहायता अपेक्षित थी, अतः बाइबिल का ईश्वर सर्वशक्तिमान भी नहीं दिखता।

८. परमेश्वर ने नीचे आकर मनुष्यों को नगर तथा सीढ़ी बनाते देखा। अब उसे यह भय हुआ कि यह निर्माण तो आरम्भ मात्र है। इस प्रकार तो मनुष्य के लिए कुछ भी असम्भव नहीं रहेगा। यहाँ यह प्रश्न सामने आता है कि मनुष्यों की उन्नति तथा एकजुटता देखकर परमेश्वर चिन्तित क्यों हुआ? जिसके फलस्वरूप उसने उन उपायों का आश्रय लिया जिनके कारण मनुष्य बिखर जायँ। स्पष्ट है कि बाइबिल में वर्णित ईश्वर मनुष्यों को सुखी तथा उन्नत देखना नहीं चाहता।

यहाँ वेदों के प्रकाण्ड पंडित और भाष्यकार महर्षि दयानन्द सरस्वती को उद्धृत करना चाहेंगे। उन्होंने अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास में स्पष्ट लिखा है -

'परमेश्वर क्या चाहता है? ..... सबकी भलाई और सब के लिए सुख चाहता है।' निश्चित ही ईश्वर वही हो सकता है जो पिता के सामान पुत्र रूपी मनुष्यों की भलाई और उन्नति चाहता हो। परन्तु बाइबिल का ईश्वर ऐसा प्रतीत होता है कि मनुष्यों की एकजुटता और उन्नति देखकर ईर्ष्या की अनुभूति करता है, ऐसा ईश्वर क्या वास्तविक ईश्वर हो सकता है? यह विचारणीय है।

अब हम वेद में देखते हैं कि ईश्वर सर्वकाल में सब प्राणियों की सर्वतोमुखी एकता चाहता है, क्योंकि जिनका मन समान हो, विचार समान हों, एक दूसरे की उन्नति हेतु साथ साथ चलने की, संवाद करने की अभिलाषा हो, तभी वे उन्नति कर सकते हैं और अपनी स्वाभाविक वृत्तियों के संतुष्ट होने से सुख प्राप्त कर सकते हैं। ईश्वर कभी ऐसा कार्य नहीं कर सकता जो मनुष्य के लिए हितकारी न हो। यहाँ हम वेद के उदाहरण से प्रमाणित करेंगे कि ईश्वर सभी मनुष्य साथ मिलकर एक इकाई की भाँति रहें, ऐसा उपदेश देता है-

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।। - ऋग्वेद १०/१९१/२

भावार्थ- मनुष्यों में अलग-अलग दल न होने चाहिए, किन्तु सब मिलकर एक सूत्र में बँधें, मिलकर रहें, इसलिए मिलें कि परस्पर संवाद कर सकें, एक-दूसरे के सुख-दुःख और अभिप्राय को सुन सकें और इसलिए संवाद करें कि मन सब का एक बने- एक ही लक्ष्य बने और एक लक्ष्य इसलिये बनना चाहिये कि जैसे श्रेष्ठ विद्वान् एक मन बनाकर मानव का सच्चा सुख प्राप्त करते हैं, ऐसे तुम भी करते रहो।

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।। - ऋग्वेद १०/१९१/३

भावार्थ- मनुष्यों के समान विचार, कार्यप्रवृत्ति समान, मन और चित्त समान होने चाहिये तथा स्तुति-प्रार्थना-उपासना समान होनी चाहिये।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।। - ऋग्वेद १०/१९१/४

भावार्थ- मनुष्यों की अहम्मन्यता एक जैसी हो, हृदय में संकल्पित व्यवहार एक जैसे हों, मन समान होना चाहिये, यह परस्पर सहयोग में आवश्यक है, मनुष्यों का परस्पर सहयोग में रहना ही मानवता है, यह जानना चाहिए।

मनुष्य को समाज में एकत्वभाव स्थापित करते हुए किस प्रकार अपने अभीष्ट को प्राप्त करना चाहिए यह परमेश्वर उक्त मन्त्रों में उपदेश करता है। परन्तु इसके उलट ईसाईयों का ईश्वर उन्हें पृथक् करने हेतु षड्यंत्र रचता है। जिसने स्वयं ने सबको एक भाषा दी थी वह उनकी भाषा को गड़बड़ा देता है, इस उद्देश्य से कि वे साथ साथ न रहें, पृथक् हो जायँ। क्या ऐसी सत्ता को ईश्वर कहा जा सकता है?

हम विचार करें तो मानव की दो मूलभूत प्रवृत्ति साफ-साफ देखने को मिलती हैं। प्रथम जैसा कहा जाता है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है इसकी पुष्टि बाइबिल की इस कथा से भी हो रही है, सभी मनुष्य मिल-जुलकर एक स्थान पर रहना चाहते

थे जिसके लिए वे नगर का निर्माण कर रहे थे। दूसरे प्रत्येक मनुष्य की अन्तर्निहित अभिलाषा उन्नति करने की होती है, वह भी यहाँ प्रत्यक्ष हो रही है। परन्तु एक कल्पित सम्भावना के चलते कि मनुष्य स्वर्ग तक अगर पहुँच गया तो वह फिर ईश्वर को भी अपने सामने तुच्छ समझने लग जाएगा, ईश्वर उनकी भाषा को बदल देता है। तब नगर बनाते मनुष्यों के सामने अचानक क्या बाधा आई होगी? अभी तक वे आपस में 'तगारी ला, फावड़े से दायीं ओर खुदाई कर', इत्यादि निर्देशों को एक भाषा के कारण समझ रहे थे और पालन कर रहे थे, इस कारण नगर निर्माण का कार्य और सीढ़ियाँ बनाने का कार्य सुचारु रूप से चल रहा था। पर परमेश्वर के द्वारा भाषा गड़बड़ाने के कारण जब एक ने यह कहा होगा 'तगारी ला' तो जिसे कहा वह समझा नहीं क्योंकि उसकी भाषा बदल चुकी थी। ऐसा सबके साथ हुआ तो उन्हें नगर निर्माण छोड़ देना पड़ा और भाषाई आधार पर समूह बना एक दूसरे से अलग हो संसार में फैल जाना पड़ा। बाइबिल के ईश्वर ने मनुष्यता के विरुद्ध ऐसा कार्य क्यों किया? इसका सर्वत्र एक जैसा उत्तर मिलता है कि 'उन्हें (मनुष्यों को) बस अपने नाम की पड़ी थी। जबकि उन्हें परमेश्वर का नाम रोशन करना चाहिए था। इसलिए परमेश्वर ने उन्हें रोकने के लिए कदम उठाया।' जिसने मनुष्य को उत्पन्न किया उस सत्ता के द्वारा ऐसा कदम क्या उचित है जिससे मनुष्यों के मध्य विभेद उत्पन्न हों? नहीं। निश्चय ही ईश्वर का व्यवहार वही होगा जो ऋग्वेद के उक्त मन्त्रों में है।

मनुष्यों द्वारा स्वर्ग तक सीढ़ी बनाने को लेकर ईश्वर का जो व्यवहार रहा उस को ले कर विचारक Dave Hustava व्यंग्य में लिखता है-

And, they got so close to succeeding, that god noticed - And promptly decided **he wasn't going to tolerate any gate-crashers in paradise. So he knocked the staircase down, and then used his Magic Powers to change the words in everybody's head,** so that they could no longer understand the speech of one another - Which, what with being god and all-knowing, he just knew that his cute little trick would forever prevent the human race from ever co-operating on any sort of massive, international project again - Which is why the International Space Station does not exist.

bible ref. नामक बेवसाईट पर इस सन्दर्भ में लिखा मिलता है-

God decides to **stop their progress** by dividing the people according to language, for starters. People who speak different languages have an immediate barrier to communication, making it harder to cooperate. Further, this would naturally begin to separate people into groups, based on those languages, and in fulfillment of God's intent for man after the flood (Genesis 11).

इस सब विवेचना के मध्य में महान् दार्शनिक व चिन्तक, मनीषी महर्षि दयान्द ने सत्यार्थ प्रकाश के १३वें समुल्लास में सत्य ही लिखा है और उत्पत्ति पर्व की उक्त आयतों पर सतर्क टिप्पणी की है।

'जब सारी पृथ्वी पर एक ही भाषा और बोली होगी उस समय सब मनुष्यों को परस्पर अत्यन्त आनन्द प्राप्त हुआ होगा परन्तु क्या किया जाए यह ईसाइयों के ईर्ष्यक ईश्वर ने सब की भाषा गड़बड़ा के सब का सत्यानाश किया। उसने यह बड़ा अपराध किया। क्या यह शैतान के काम से भी बुरा काम नहीं है? और इससे यह भी विदित होता है कि ईसाइयों का ईश्वर सनाई पहाड़ आदि पर रहता था और जीवों की उन्नति भी नहीं चाहता था। यह बिना एक अविद्वान् के ईश्वर की बात और यह ईश्वरोक्त पुस्तक क्योंकर हो सकता है।'

अतः बाइबिल में प्रारम्भ में एक भाषा का उल्लेख स्पष्ट मिलता है परन्तु अन्य उल्लेख ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव के अनुकूल न होने के कारण असत्य हैं। सभी विचारशील भाई बहिनों को महर्षि के कथन के प्रकाश में विचार अवश्य करना चाहिए।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

अग्निवीर या अंग्रेजीवीर?

पिछले दिनों सेना में जवानों की भर्ती सम्बन्धी भारत सरकार की अग्निवीर योजना पर खासा बवाल हुआ। अधिकांश विपक्षी दलों ने इसका जमकर विरोध किया और कई राज्यों में कई दिनों तक हिंसक घटनाओं में देश जलता रहा। लेकिन इसके बावजूद ज्यादातर देशवासियों ने इसका मुखर या मौन समर्थन ही किया। जिन लोगों को इस योजना की पूरी जानकारी नहीं थी, जानकारी मिलने पर उनका विरोध भी खत्म हुआ। सरकार ने युवाओं की चिन्ताओं पर ध्यान देते हुए उनके रोजगार के लिए सुरक्षाबलों और सरकार में रोजगार की व्यवस्था के आश्वासन दिए। इसके साथ-साथ देश की कई बड़ी कम्पनियों ने भी सेवानिवृत्त होने वाले अग्निवीरों को अपने यहाँ रोजगार देने की बात कही।

लेकिन अब जो बात निकल कर आ रही है कि सेना में भर्ती के लिए अग्निवीरों की वीरता यानी शारीरिक, मानसिक क्षमता से अधिक अंग्रेजी की परीक्षा पर ज्यादा जोर है। यह सर्वविदित है कि सेना और सुरक्षा बलों में ज्यादातर जवान ग्रामीण क्षेत्र से आते हैं जहाँ अंग्रेजी का कोई वातावरण नहीं होता। ऐसे में अग्निवीर भर्ती योजना के अन्तर्गत अंग्रेजी को अत्यधिक महत्व दिया जाना किसी भी दृष्टि से उपयुक्त प्रतीत नहीं होता। देश के जवानों के लिए देश की भाषा के बजाए गुलामी की भाषा को इतना महत्व देना स्वाधीनता, स्वतंत्रता और राष्ट्रीय स्वाभिमान के अनुकूल नहीं है। जवानों को युद्ध में दुश्मन से अंग्रेजी में बात नहीं करनी बल्कि लड़ना है। यह भी कि जवानों को अंग्रेजी बोलनेवाले अधिकारियों की नहीं बल्कि सैन्यअधिकारियों को जवानों की भाषा सीखनी बोलनी चाहिए। हमारी सेना अंग्रेजों की नहीं बल्कि स्वाधीन भारत की सेना है।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भारत के संविधान निर्माताओं ने अंग्रेजी को नहीं बल्कि हिन्दी को भारत संघ की राजभाषा बनाया है जो इस देश के जनमानस की और राष्ट्रीय संपर्क की भाषा भी है। इस विषय को लेकर श्री हरपाल सिंह राणा जो कि निरन्तर भारतीय भाषाओं के लिए संघर्ष करते रहे हैं उन्होंने राष्ट्रहित और जनहित में भारत के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री को अपनी शिकायत भेज कर विरोध व्यक्त किया है और इस विषय में पुनर्विचार का अनुरोध भी किया है।

होना तो यह चाहिए कि सभी अग्निवीरों को जो हिन्दी नहीं जानते हैं उन्हें भी हिन्दी लिखने-पढ़ने में पारंगत किया जाए ताकि राष्ट्रीय स्तर पर सेना में सम्पर्क की भाषा के रूप में हिन्दी विकसित हो और सेवानिवृत्ति के पश्चात् ये अग्निवीर देश में स्वतंत्रता सेनानियों की अपेक्षाओं के अनुरूप राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी के प्रचार-प्रसार का माध्यम बन सकें।

सरकारी व्यवस्था में सेना में और अफसरशाही में अंग्रेजी का इतना अधिक वर्चस्व है कि उन्हें यह समझ नहीं आता कि भारत की सम्पर्क भाषा राजभाषा हिन्दी है न कि अंग्रेजी और गाँवों में रहने वाले बच्चे अंग्रेजी के विद्वान् नहीं हैं। मा. रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह जी से भी अनुरोध है कि वे इस सम्बन्ध में व्यक्तिगत स्तर पर ध्यान देकर अग्निवीर भर्ती में अंग्रेजी ज्ञान को इतना महत्व देने के बजाए हिन्दी और मातृभाषा ज्ञान पर जोर दें। यह भारत सरकार की नई शिक्षा नीति के भी अनुरूप होगा।

सभी भारतीय भाषा प्रेमियों को यह मुद्दा उठाना चाहिए कि भारत सरकार अग्निवीर योजना के अन्तर्गत की जाने वाली भर्तियों में अंग्रेजी के बजाए हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं को महत्व दें।

- डॉ. मोतीलाल गुप्ता 'आदित्य'
निदेशक, वैश्विक हिन्दी सम्मेलन।

भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक के साथ मेरा संवाद

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

दिनांक ३० जून २०२२ सायं ६.०० बजे से ८.०० बजे प्रथम बार भारत के एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रो. सिसिर राय जी के साथ साक्षात् परिचर्चा (डिबेट) हुई। मैं इसकी जानकारी सार्वजनिक करना आवश्यक समझता हूँ। मुझे लगता है कि किसी भी वैदिक विद्वान् की किसी भी शीर्ष भौतिक वैज्ञानिक के साथ इस तरह की परिचर्चा प्रथम बार हुई होगी। यूँ तो मेरी भारत के शीर्ष वैज्ञानिक संस्थानों भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र (बीएआरसी) मुम्बई, टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फण्डामेण्टल रिसर्च (टीआईएफआर) मुम्बई, राष्ट्रीय भौतिक विज्ञान प्रयोगशाला (एनपीएल), नेशनल सायन्स एकेडमी व कुछ विश्वविद्यालयों के भौतिकी के प्रोफेसर्स के साथ सन् २००४ से ही चर्चा होती रही है, परन्तु वह चर्चा वर्तमान भौतिकी की समस्याओं को लेकर ही हुआ करती थी। अप्रैल २०१८ में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के विज्ञान संस्थान में वैदिक रश्मि थ्यौरी को मैंने सर्वप्रथम सार्वजनिक किया था, तब वहाँ का कोई प्रोफेसर उस पर कोई प्रश्न खड़े नहीं कर पाया था। हाँ, शोध छात्रों ने कुछ प्रश्न पूछे थे, उनका उत्तर दे दिया गया था। वे प्रश्न साधारण ही थे। इस बार प्रो. सिसिर राय जी से जो चर्चा हुई, वह पूर्णतः वैदिक रश्मि थ्यौरी पर उनके ही प्रश्नों का उत्तर देने के लिए हुई थी। प्रो. राय सैद्धान्तिक भौतिकी के भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक हैं। इन्होंने अपना अधिकांश अनुसंधान कार्य अमेरिका, फ्रांस व अन्य यूरोपियन देशों में किया है। ये अभी इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ सायंस बैंगलूरु में विजिटिंग प्रोफेसर एवं सीनियर होमी भाभा फैलो नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज के पद पर कार्यरत हैं। इन्होंने लगभग डेढ़-दो वर्ष पूर्व मुझसे सम्पर्क किया था। इन्हें हिन्दी भाषा लगभग नहीं आती है, इस कारण संवाद बहुत कम ही हुआ।

श्री विशाल आर्य की 'परिचय वैदिक भौतिकी' नामक पुस्तक का अंग्रेजी संस्करण पढ़कर इनकी मुझसे बात करने की तीव्र इच्छा हुई। इसके लिए मैंने हमारे एक न्यासी डॉ. सन्दीप कुमार सिंह, जो भौतिक वैज्ञानिक हैं तथा वर्तमान में जे.के. लक्ष्मीपत विश्वविद्यालय, जयपुर में भौतिकी के प्रोफेसर हैं, को मीडियेटर बनाने का सुझाव दिया। इस विषय में डॉ. सन्दीप कुमार सिंह ने प्रो. सिसिर राय से चर्चा की, परन्तु वे इससे सहमत नहीं हुए और उन्होंने अपनी ओर से बिना मुझसे चर्चा किए महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक के डॉ. रविप्रकाश जी आर्य को दुभाषिया के रूप में चुना।

यहाँ मैं पाठकों को डॉ.सन्दीप कुमार सिंह के विषय में इतना ही कहना चाहूँगा कि ये अपनी धर्मपत्नी सहित स्वीडन में वैज्ञानिक थे तथा हमारी वीडियो देखकर इनकी अपने देश लौटने की इच्छा हो गयी और आज वे यहाँ हैं। ये युवा वैज्ञानिक हैं। बात केवल मेरे और प्रो. राय के मध्य होनी थी, जो मेरी जानकारी में पूर्णतः व्यक्तिगत थी, परन्तु जब ३० जून २०२२ को चर्चा प्रारम्भ हुई, तो डॉ. रविप्रकाश जी आर्य ने इसे डिबेट की संज्ञा दी। चर्चा को पूर्णतः व्यक्तिगत जानकर मैंने इस चर्चा का कोई प्रचार नहीं किया, केवल डॉ. सन्दीप कुमार सिंह को ही जानकारी थी। चर्चा से एक वा दो दिन पूर्व हमारे एक न्यासी डॉ. भूपसिंह जी (भिवानी) से.नि. एसोसिएट प्रोफेसर, भौतिकी को डॉ. रविप्रकाश जी आर्य ने इसकी जानकारी दी और डॉ. भूपसिंह जी ने मुझे बताया कि क्या प्रो. राय के साथ कोई डिबेट हो रही है? इस पर मैंने उन्हें कहा कि मुझे इसकी जानकारी नहीं है कि क्या चर्चा

होगी? हाँ, कुछ व्यक्तिगत चर्चा, जो वैदिक रश्मि थ्यौरी से सम्बन्धित रहेगी, होने की बात है। यह सार्वजनिक चर्चा है, ऐसा मुझे कोई ज्ञान नहीं है। वस्तुतः यह उचित नहीं था। चर्चा व्यक्तिगत रहेगी वा सार्वजनिक, इसकी जानकारी मुझे अवश्य करनी थी। चर्चा हुई तो ज्ञात हुआ कि उस चर्चा में लगभग २६ व्यक्ति जुड़े थे, जिनमें कई विदेशी भी थे। सभी बड़े-बड़े प्रबुद्ध व्यक्ति थे। यदि मुझे यह पता होता, तो हम भी इसका प्रचार कर सकते थे और हमारे अनेक महानुभावों को इसको लाभ मिलता, परन्तु ऐसा नहीं हुआ। हम उसे अपने स्तर से रिकार्ड भी नहीं कर सके। पुनरपि उसकी रिकार्डिंग हमें प्राप्त हो गयी है। रिकार्डिंग अच्छी न हो पाने से उसे हम अपने यू-ट्यूब चैनल 'Vedic Physics' पर नहीं डाल पा रहे हैं।

मैं डिबेट के कुछ मुख्य बिन्दुओं को आप सबके समक्ष प्रस्तुत करना आवश्यक समझ रहा हूँ-

प्रिय विशाल आर्य की पुस्तक पढ़कर उन्हें मैटर, मटेरियल एवं सब्सटेंस जैसे शब्दों के प्रयोग पर बात करनी थी, इस पर मैंने कहा कि वैदिक भाषा के द्रव्य व पदार्थ पदों का उचित समानार्थक शब्द न होने से अनुवादक ने अंग्रेजी भाषा के इन शब्दों का प्रयोग किया है। यदि वैदिक विज्ञान पढ़ना है, तो केवल अंग्रेजी भाषा जानने वाले पूर्णतः नहीं जान सकते, उन्हें हिन्दी व संस्कृत भाषा सीखनी ही होगी। इस पर प्रो. राय सम्भवतः उदास ही हो गये। इसी प्रकरण में आकाश की चर्चा प्रारम्भ होने पर उन्होंने पूछा -

प्रो. सिसिर राय- क्या स्पेस में गति वा हलचल होती है?

आचार्य अग्निव्रत- अवश्य होती है।

प्रो. सिसिर राय- फिजिक्स स्पेस में गति नहीं मानता।

आचार्य अग्निव्रत- फिजिक्स यदि स्पेस में गति नहीं मानता, तब हलचल रहित वा गतिहीन स्पेस में कर्वेचर व डिस्टॉर्सन कैसे मानता है? बिना गति वा हलचल के किसी भी पदार्थ का वक्र होना वा उसका संकुचन व प्रसारण कैसे माना जा सकता है? फिर बिग-बैंग समर्थक वैज्ञानिक प्रारम्भ में स्पेस का तेजी से फैलना, वह भी १०२८ कि.मी./से. कैसे मानता है? यद्यपि आप बिग-बैंग थ्यौरी नहीं मानते, तब भी स्पेस का कर्वेचर तो मानते ही हैं, जिस पर आइंस्टीन की सम्पूर्ण जनरल रिलेटिविटी टिकी हुई है।

प्रो. राय- मौन...

आचार्य अग्निव्रत- स्पेस में द्रव्यमान व विद्युत आवेश होता है वा नहीं?

प्रो. राय- मौन...

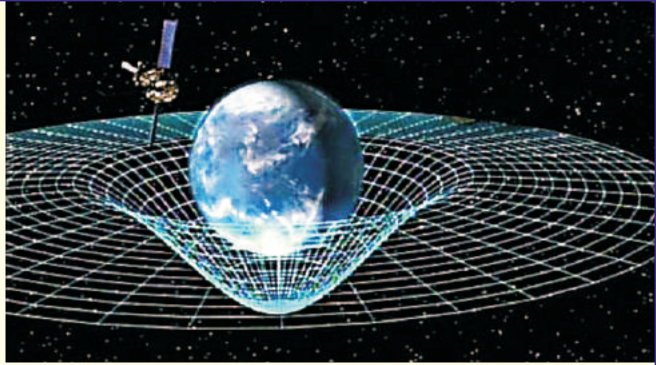

(स्मरण रहे जब तीन अमेरिकी वैज्ञानिकों को गुरुत्वीय तरंगों की खोज पर नोबल पुरस्कार मिला था, तब ये दो प्रश्न मैंने २०१७ में नोबल फाउण्डेशन के चेयरमैन, नोबल पुरस्कार विजेता तीनों वैज्ञानिकों, विश्व का सबसे बड़ा माना जाने वाला वैज्ञानिक संस्थान नासा, विश्व की सबसे बड़ी प्रयोगशाला सर्न तथा विश्व के २७ देशों के ४० शीर्ष विश्वविद्यालयों के भौतिक विज्ञान विभागों से भी पूछे थे। कुल ६ प्रश्न थे, उसमें दो प्रश्न ये भी थे। भारत के सभी केन्द्रीय विश्वविद्यालयों व आईआईटी के भौतिक विज्ञान विभागों को भी उस पत्र की प्रतिलिपि मेल की थी। इनमें से नासा ने मुझे मेल अवश्य भेजा, परन्तु मेरे प्रश्नों से बचना ही उचित समझा। एक नोबल पुरस्कार विजेता किप थोर्न ने मेल भेजकर मेरे प्रश्नों से अभिभूत होते हुए भी किसी भी प्रश्न का उत्तर देने में असमर्थता व्यक्त की, तब संसार में अन्य किसी से क्या अपेक्षा की जा सकती है? इसलिए प्रो. सिसिर राय भी मौन रहे।

आचार्य अग्निव्रत- स्पेस में द्रव्यमान व विद्युत आवेश अवश्य होता है। इसका कारण यह है कि आइंस्टीन की जनरल रिलेटिविटी के अनुसार बहुत भारी पिण्ड (तारा आदि) के द्रव्यमान के कारण स्पेस कर्व हो जाता है। वर्तमान भौतिकी इसी को गुरुत्व बल नाम भी देती है। अब प्रश्न यह है कि कोई भी द्रव्यमान वाला पदार्थ अन्य द्रव्यमान वाले पदार्थ को ही आकर्षित व प्रभावित करता है, बिना द्रव्यमान वाले को कदापि नहीं, तब यदि स्पेस में द्रव्यमान नहीं होता, तो कोई तारा उसे कर्व कर ही नहीं सकता था। इससे सिद्ध है कि स्पेस में द्रव्यमान अवश्य होता है।

अब रही विद्युत आवेश की बात, इस विषय में प्रसिद्ध अमेरिकी वैज्ञानिक रिचर्ड पी. फाइनमैन ने लिखा है कि विद्युत् धनावेशयुक्त कण के निकट स्पेस डिस्टोर्ट होता है। इससे सिद्ध है कि वर्तमान भौतिकी की दृष्टि में विद्युत् आवेश द्वारा स्पेस डिस्टोर्ट होता है, कर्व होता है। हम सब जानते हैं कि विद्युत् आवेशयुक्त पदार्थ विद्युत् आवेशयुक्त पदार्थ को ही प्रभावित कर सकता है, सर्वथा निरावेशित पदार्थ को

कदापि नहीं, इससे स्पेस में भी विद्युत् आवेश सिद्ध होता है।

प्रो. राय– मौन...

(इन दो गम्भीर प्रश्नों के अतिरिक्त तो अन्य चर्चा मुझे महत्वपूर्ण नहीं लगी, जिसको प्रस्तुत करना आवश्यक प्रतीत नहीं होता। हाँ, एक प्रश्न, जिसे कोई भी, कभी भी हमसे पूछता रहता है, भी उन्होंने पूछ लिया, जो उनके स्तर का तो कदापि नहीं था।

प्रो. राय– आप अपनी थ्यौरी पर प्रयोग क्यों नहीं करते, क्यों वैज्ञानिक आपके साथ नहीं जुड़ रहे?

आचार्य अग्निव्रत– अमेरिकी वैज्ञानिक रिचर्ड पी. फाइनमैन ने कहा है कि सैद्धान्तिक भौतिक वैज्ञानिक न प्रयोग करता है और न प्रेक्षण करता है, बल्कि वह कल्पना, तर्क व अनुमान के ठोस आधार देता है, जो मैं दे रहा हूँ और देता रहा हूँ। अमेरिकी वैज्ञानिक पीटर हिग्स ने १९६१ में हिग्स बोसोन की कल्पना की थी। सम्पूर्ण विश्व ने ६१ वर्ष धैर्य रखा और विश्व की सरकारों ने सम्पूर्ण शक्ति उस कल्पना को साकार करने में लगा दी। ७० देशों के ८००० वैज्ञानिक व इंजीनियर उसे साकार करने में सर्न में एक साथ जुटे, खरबों डॉलर व्यय हुए और २०१२ में महाप्रयोग हुआ और पीटर हिग्स को नोबल पुरस्कार मिल गया। इस खोज पर आज भी मेरे अनेक प्रश्न हैं, जिनका उत्तर विश्व का कोई वैज्ञानिक नहीं दे सकता और न दे सका। आइंस्टीन ने लगभग एक सौ वर्ष पूर्व गुरुत्वीय तरंगों की कल्पना संसार को दी। संसार ने एक सदी तक धैर्य रखा और २०१५ में इसकी पुष्टि की घोषणा हुई और २०१७ में इस पर नोबल पुरस्कार मिला, जिस पर भी मेरे उपर्युक्त प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं दे सका। प्रो. राय! आप ही सोचें कि इन दो कल्पनाओं के लिए विश्व क्रमशः ६१ व १०० वर्ष तक धैर्य रख सकता है, तब मुझसे यह आशा क्यों की जाती है कि 'वैदिक रश्मि थ्यौरी' पर आज ही कोई प्रयोग हो जाए? उन कल्पनाओं को साकार करने में विश्व की सभी सरकारें व सभी वैज्ञानिक जुट जाते हैं और मेरे साथ कौन है? मेरे एक शिष्य प्रिय विशाल आर्य व डॉ. सन्दीप कुमार सिंह जैसे कुछ युवा वैज्ञानिक। वैज्ञानिकों के पास खरबों डॉलर हैं, मेरे पास क्या है? मैं तो डॉ. सन्दीप कुमार सिंह जैसे वैज्ञानिक, जो यहाँ रहकर शोध करना चाहते हैं, को अपने पास रखने की स्थिति में भी नहीं हूँ। मेरे साथ न कोई सरकार है, न समाज है, न कोई संगठन और न भारत का कोई ऐसा शीर्ष उद्योगपति, जो सम्पूर्ण वित्तीय भार वहन करने को उद्यत होवे, तब कैसे हम बिना किसी साधन व सहयोग के सभी कार्य कर लें? कैसे सबको जोड़ें? प्रो. राय! मैं आपका आह्वान करता हूँ कि आप जैसे वैज्ञानिक हमारे साथ आएँ, करें प्रयोग।

मैं संसार के सभी शीर्ष वैज्ञानिकों के समक्ष आज पुनः अपना दावा प्रस्तुत करता हूँ कि स्पेस में द्रव्यमान व विद्युत् आवेश दोनों ही विद्यमान होते हैं और वे किस रूप में व किस स्तर के होते हैं? वस्तुतः द्रव्यमान व विद्युत् आवेश का स्वरूप क्या होता है? यह हमारी वैदिक रश्मि थ्यौरी के द्वारा हम ही समझा सकते हैं। मुझे विश्वास है कि यदि संसार के वैज्ञानिक अपनी गम्भीर समस्याओं, जिन्हें वे अरबों डॉलर व्यय करने के उपरान्त भी नहीं सुलझा पा रहे, का समाधान चाहते हैं, तो उन्हें हमारी ओर आना ही होगा, उनके पास अन्य कोई मार्ग नहीं है। सरकारें तो अपनी नितान्त अज्ञानतावश तथा अपने वैज्ञानिकों के प्रति अन्ध श्रद्धावश नहीं सुनेंगी। आज विश्व के वैज्ञानिक अहंकार वा किसी पूर्वाग्रहवश हमारी बात नहीं सुनेंगे, परन्तु जब वे समस्याओं के भंवरजाल से वास्तव में निकलना चाहेंगे, तब उन्हें हमारी ओर आना ही होगा।

इस उत्तर के पश्चात् प्रो. राय ने डिबेट समाप्त करने का आग्रह किया और डिबेट समाप्त हो भी गयी। यह सन्तोषजनक था कि उपस्थित महानुभावों ने सकारात्मक प्रतिक्रिया ही दी। डॉ. भूपसिंह जी तथा डॉ. सन्दीप कुमार सिंह ने डिबेट के पश्चात् मुझे बहुत बधाई दी। दूसरे दिन डॉ. भूपसिंह जी ने डॉ. रविप्रकाश जी आर्य के हवाले से मुझे सूचित किया कि प्रो. सिसिर राय ने डॉ. रविप्रकाश जी आर्य को फोन करके सूचित किया कि वे डिबेट व मुझसे बहुत प्रभावित हुए। मैं डिबेट के लिए प्रो. राय जी तथा डॉ. रविप्रकाश जी आर्य को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ।

मित्रो! मैं अभी अनेक लेखनादि कार्यों में व्यस्त हूँ। मैं तो चाहता हूँ कि यदि सरकार का सहयोग न मिला तो, देश के शीर्ष उद्योगपति इस कार्य के महत्व को समझें, तो मैं व विशाल आर्य अपनी टीम के साथ विश्व के किसी वैज्ञानिक मंच पर चर्चा के लिए प्रस्तुत रहेंगे। वैसे यह हर कोई समझेगा कि बिना शासन के सहयोग से कोई भी विज्ञान विकसित नहीं हो सकता। हम तो कुछ दानदाताओं के बल पर ही यथा सामर्थ्य कार्य कर रहे हैं। अभी कुछ वर्ष और कुछ विशेष कार्य करना है। मेरा कार्य वर्तमान विज्ञान का विरोध करना नहीं, बल्कि उनकी सहायता करके विज्ञान को उचित दिशा देकर संसार के लिए पूर्ण निरापद बनाना है।

आइए हम सब मिलकर बोलें- जय माँ वेद भारती

– श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास
भागल भीम, भीनमाल-३४३०२९, जिला- जालोर (राज.)

वेद भारतीय संस्कृति के मूल आधार माने जाते हैं। पर आज वेदों की स्थिति क्या है? इस विषय में विभिन्न विचार सुने जाते हैं। इसका कारण धर्म तत्व के विषय में विभिन्न विचारों का समय-समय पर उत्पन्न होना। मूल रूप में मानव-मात्र के लिए धर्मज्ञान का उद्बोधक केवल वेद प्रादुर्भाव में आया, यह ज्ञानपुंज मानव के प्रथम प्रकाश अर्थात् मानव-सृष्टि के साथ हुआ। स्वाभाविक था कि मानव-मात्र के मार्गदर्शन की क्षमता को लेकर यह प्रकट हो। वेद प्रदर्शित मार्ग मानव-मात्र के लिए जीवन पद्धति का उद्बोधक है।

अधिक अतीत बीत चुका है- लाखों, करोड़ों और अरबों वर्षों तक। इतनी बड़ी यात्रा को किसी प्रकार निरापद नहीं कहा जा सकता। विचारकों द्वारा यह एक स्वीकृत पक्ष है कि महान् संघर्ष उठ खड़ा हुआ हो। अन्य भी अनेक प्रकार के कारण जहाँ सम्भव हो सकते हैं, वहाँ पर यह भी कल्पना की जा सकती है कि समाज में वेदमूलक पूजा पद्धति के विषय में विभिन्न विचारधारा उभर आई हो। वेदों की व्याख्या भी अपने विचारों के अनुकूल होने लगी हो। ऐसे आधारों पर नवीन विचारधारा को प्राचीन के साथ रहना असह्य हो गया हो, तब उस वर्ग के अनुसार किसी दूसरे प्रदेश का सहारा लिया गया हो। ऐसी दशा में समाज का विस्तार हुआ, पर उसके अनुरूप मूल रूप में वेद का प्रसार होने में बाधा आई। या तो विमुक्त वर्ग ने अपने समाज के लिए उनका आश्रय न लिया अथवा आंशिक आश्रय लिया। आश्रय से भी मूल स्थान से कट जाने के कारण तथा अन्तराल में चालू सम्पर्क न रह जाने के कारण कालान्तर में रही-सही शृंखला भी

वेद एवं उसकी प्राचीनता
विश्व के पुस्तकालय में सबसे प्राचीन ग्रन्थ

मानव का सर्वप्रथम उद्भव किसी एक ही स्थान पर हुआ और वहाँ से कालक्रम के अनुसार जीवन साधनों की अपेक्षा तथा अन्य कारणों से धीरे-धीरे अपेक्षित दिशाओं में फैलता रहा। मानवसमाज के प्रादुर्भाव का कौन-सा स्थान होगा? सम्भव है इसका उत्तर आगे इसी लेख में उपलब्ध हो जाय। जब कोई वर्ग मुख्य समाज से विमुख होकर स्थानान्तर के आश्रय के लिए बाध्य हुआ होगा, उसके ऐसा कदम उठाने के कारणों का विवरण देना भी आज सम्भव नहीं। हो सकता है कि निवास स्थान की कमी अनुभव की गई हो; हो सकता है कि जीवन-निर्वाह के अपेक्षित साधन उपलब्ध न रहे हों, उनमें कमी आ गई हो; हो सकता है परस्पर कोई अनिवार्य विच्छिन्न होकर बिखर गई। समाज का यही अलग-अलग हुआ वर्ग तथा विभिन्न कालों में इसी प्रकार से अनेक अलग हुआ वर्ग जैसे-तैसे तात्कालिक कारणों से बाध्य होकर दूर-दूर तक आगे-आगे फैलते रहे, वैसे-वैसे अपने मूल स्थान से सर्वथा अलग होकर एक नई संस्कृति के साथ नये समाज के रूप में संसार के मानव गणना पट्ट पर दिखाई देने लगे।

उसी समाज के मनीषियों ने जब यह कहा कि संसार के पुस्तकालयों में सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेदादि ग्रन्थ हैं, तब वह बात उन्होंने अवश्य कुछ साहस बटोर कर कही होगी। कुछ तथ्यों को इस रूप में समझा होगा। यह बयान हमें समझने के

लिए आकृष्ट करता है कि क्यों हम इस बात को स्वीकार करें कि आदिमानव के प्रादुर्भाव के साथ वेद प्रकाश में आया जो वस्तुतः एक तथ्य है।

समाज के साथ 'ज्ञान' की एक लम्बी यात्रा की कहानी पर यदि गंभीरतापूर्वक ध्यान दिया जाय तो यह एक तथ्य भी कुछ स्पष्ट रूप से झलक आता है कि मानव का प्रथम प्रादुर्भाव कहाँ हुआ? इसके लिए परख की कसौटी है- आज तक चला आ रहा वेद का निरन्तर अविच्छिन्न प्रवाह। उस समाज में इस परम्परा को सुरक्षित रखा है जो आज तक अपने मूल स्थान के साथ सशक्त प्रदेश में उसी प्रकार विद्यमान है जैसे आज से लाखों वर्ष पूर्व वर्तमान था। मानवमात्र का उद्घोषक होने पर भी इसी कारण आज भारतीय संस्कृति का आधार समझा जाता है।

यह एक स्पष्ट बात होते हुए भी हमें आज यह प्रयास अथवा उद्घोषणा क्यों करना पड़ता है कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है? इसका कारण है- इस लम्बे यात्राकाल में उभारी गई

प्रतियोगिता। संसार के अनेक सामाजिक वर्ग अपने लिए अन्य 'ईश्वरीय ज्ञान' का दावा करते हैं। यदि वस्तुतः वे उस रूप में ईश्वरीय ज्ञान है, तो ईश्वर की न्यायप्रियता को वे चुनौती देते हैं। कारण यह है कि जब ये तथाकथित 'ईश्वरीय ज्ञान' प्रादुर्भाव में आये थे, उसके पहले लाखों करोड़ों वर्षों से मानव समाज का प्रवाह संसार में चालू था। वे सब संसार के मानव उस ज्ञान से वंचित रह गए जो अनन्तर काल अर्थात् बाद के काल में सामने आया था। तब कोई भी विचारशील यह कह सकता है कि उन मनुष्यों के प्रति क्या ईश्वर ने यह अन्याय नहीं किया जो उसने अपने उद्बोधन ज्ञान से उनको वंचित रखा? उन वर्गों के मनीषी इस प्रकार के अनौचित्यों के समीकरण के लिए विविध रूप में तर्कों का जाल बिछाते हैं, पर जाल में किसी विवेकशील व्यक्ति को आज तक नहीं फंसाया जा सका और न तो फंसाया जा सकता है कि ईश्वरीय ज्ञान का प्रकाश आदि मानव के प्रादुर्भाव के साथ होना ही न्याय है अन्यथा किसी भी प्रकार से उन दोषों से बचना कठिन होगा, जो अन्याय और पक्षपात के दायरे में आ जाते हैं।

जो लोग ऐसा मानते हैं कि परमेश्वर की ओर से ज्ञान व प्रेरणा जिसे इलहाम और आदेश कहते हैं, समय-समय पर भक्तों को प्राप्त होता ही रहता है। मानव सृष्टि के आरम्भ में ही ईश्वरीय ज्ञान मानने की कोई आवश्यकता नहीं उन्हें स्मरण रखना चाहिए कि ऐसा मानने से संसार के बड़े-बड़े अनर्थ होते रहे हैं और भविष्य में भी हो सकते हैं। हम किसी व्यक्ति पर अनुचित आक्षेप करना उचित नहीं समझते तथापि सब जानते हैं कि कितनी बार अनेक साम्प्रदायिक नेताओं तथा आध्यात्मिक गुरुओं ने ईश्वरीय आदेश का नाम लेकर ऐसे-ऐसे कार्य किए हैं जिनका कोई बुद्धिमान पुरुष समर्थन नहीं कर सकता। इस सम्बन्ध में एक उदाहरण देना पर्याप्त होगा। मुहम्मद साहब जिनके अपने ही दत्तक पुत्र जैद की पत्नी जैनब को ईश्वरीय आदेश वा इलहाम से अपनी पत्नी बना लेने का है।

श्री एच जी वेल्स ने Outliner of world History: New York, one volume Edition, Page 608 तथा Short History of the World: page 137' डॉ. मार्गोलियोथ डि. लिन ने Encyclopedia of Religion and Ethics: volume VIII Page 878 सर विलियम मूर ने Mohammedanism and Islam Page 196-197 डॉ. ह्यूग ने Notes on Mohammedanism Page 2 रवेरेन्ड डॉ. रैजन ने Dictrionory of Islam page 396 तथा अन्य अनेक पाश्चात्य विद्वानों ने Studies in Mohammedanism इत्यादि ग्रन्थों में की है जिनको उद्धृत करना अप्रिय लगता है। जैनब के साथ निकाह की इजाजत देने वाली आयत कुरान पारा : २२, सूरा अहज़ाब आयत ३६ से ४० में विद्यमान है जिनकी उपर्युक्त पाश्चात्य तथा अन्य यूरोपीय विद्वानों ने भयंकर आलोचना की है। सृष्टि के आरम्भ में न मानकर मध्य, मध्य में भी आदेश या इलहाम को मान लेने पर ऐसे भ्रमों की सम्भावना बहुत अधिक होगी। अतः इलहाम या ईश्वरीय ज्ञान मानव सृष्टि के आदि में ही माना जा सकता है, सृष्टि के बीच-बीच के समयों में नहीं। अन्यथा ईश्वर को अल्पज्ञता, अन्याय एवं पक्षपात के दोषों से मुक्त नहीं समझा जा सकता है।

लेखक- श्री शिवनारायण सिंह गौतम
साभार- वेद के पाठक सावधान

ईश्वर स्थूल पदार्थ न होकर सूक्ष्मतम सत्ता होने के कारण आँखों से दिखाई नहीं देता

हमें किसी बात को सिद्ध करना हो तो हमें लिखित व दृश्य प्रमाण देने होते हैं। ईश्वर है या नहीं, इसका लिखित प्रमाण हमारे पास वेद के रुप में विद्यमान है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है अर्थात् वेद ईश्वरप्रोक्त व ईश्वर के कहे हुए हैं। वेदों का ज्ञान ईश्वर से मनुष्यों तक कैसे आया, इसका उल्लेख ऋषि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' में किया है। यह वर्णन इतना स्वभाविक, सरल, सत्य और प्रामाणिक है कि यदि इसे कोई शुद्ध व पवित्र मन व आत्मा का व्यक्ति पढ़ता है, इस पर सूक्ष्मता से विचार करता है तो उसे यह स्पष्ट हो जाता है कि वेद मनुष्यकृत ज्ञान नहीं अपितु अपौरुषेय अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान है। आज भी मनुष्य ईश्वर के नाम पर जड़ पदार्थों की मूर्ति बनाकर उसकी पूजा करते हैं। यह ऐसा ही है कि जैसे हम अपने माता-पिता व आचार्यों की जो हमारे निकट साक्षात् स्वरुप से विद्यमान हों, उनका कैमरे से चित्र बनाकर अथवा उनकी मूर्ति बनाकर उस पर माला चढ़ायें, फूल, वृक्षों के पत्ते व जल आदि उन पर चढ़ायें और वहाँ कुछ धन भी रख दें। जिस प्रकार से इस काम को सामान्य व्यक्ति अनुचित कहेगा, उसी प्रकार से माता-पिता व आचार्य भी उस मनुष्य को मतिमन्द ही कहेंगे। माता-पिता व ईश्वर की पूजा उनकी आज्ञाओं का पालन व उनकी सेवा करना आदि कार्य हैं।

ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वव्यापक, निराकार, सर्वशक्तिमान तथा सर्वान्तर्यामी है। उसे हमारी सेवा व पूजा की आवश्यकता नहीं है। हमें उसकी वेदाज्ञा का पालन और उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना करनी है जिससे हमें इन कार्यों को करने के लाभ प्राप्त हो सकें। ईश्वर हमारे सभी कर्मों का साक्षी भी है। हम उसे नहीं देख पा रहे हैं। इसके लिए हमें उन साधनों को अपनाना पड़ेगा जिससे ईश्वर का साक्षात्कार या प्रत्यक्ष होता है। ऐसा करके हम ईश्वर को यथार्थ रुप में जान सकेंगे व उसका प्रत्यक्ष कर सकेंगे। यह भी विचारणीय है कि हम जीवन में सुख चाहते हैं, दुःख का लेश भी नहीं चाहते। हमें दुःख कौन देता है, इसका उत्तर यह है कि कर्म फल व्यवस्था के अनुसार ईश्वर ही हमें हमारे जन्म-जन्मान्तरों के कर्मों का फल देता है जो कि सुख व दुःख रूपी होता है। मनुष्यों में भिन्न-भिन्न प्रकार के सुख व दुःख भी ईश्वर के अस्तित्व का परिचय कराते हैं।

बहुत से लोग पूछते हैं कि यदि ईश्वर है तो वह दीखता क्यों नहीं? इसका उत्तर यह है कि संसार में दो प्रकार के पदार्थ हैं, चेतन व जड़। चेतन पदार्थ अत्यन्त सूक्ष्म व निरावयव हैं। दूसरी सत्ता जड़ प्रकृति है। यह प्रकृति भी अपनी मूल वा कारण अवस्था में अत्यन्त सूक्ष्म है और इसे मनुष्य व अन्य प्राणी अपनी आँखों से नहीं देख सकते। यह मूल प्रकृति जब ईश्वर द्वारा सृष्टि के आरम्भ में परमाणु व अणु रुप में परिवर्तित की जाती है तो हम उसके बाद अपनी आँखों से केवल स्थूल पदार्थों को ही देखते पाते हैं। आकाश, जल व वायु में अनेक सूक्ष्म कीटाणु होते हैं जिन्हें हम आँखों से नहीं देख सकते। सूक्ष्मदर्शी यन्त्र से कुछ सूक्ष्म कीटाणुओं को देखा जा सकता है। विज्ञान परमाणु को मानता है परन्तु आज तक किसी वैज्ञानिक ने परमाणु को आँखों से देखा नहीं है। केवल अध्ययन व कुछ परीक्षणों के आधार पर उनकी सिद्धि होती है और उन्हें माना जाता है। हमारे शरीर में हमारी आत्मा है। हमें अपनी आँखों से अपने व दूसरों के शरीरों के तो दर्शन होते हैं परन्तु उन सभी शरीरों के भीतर जो सूक्ष्म आत्मा है वह हमें दिखाई नहीं देती। मृत्यु के समय भी जब आत्मा सूक्ष्म शरीर सहित निकलती है, तब भी वहाँ विद्यमान लोगों को मृत्यु को प्राप्त हो

रहे मनुष्य की आत्मा दिखाई नहीं देती। ईश्वर हमारी आत्मा से भी सूक्ष्म है। अतः आत्मा से भी सूक्ष्म पदार्थ ईश्वर का आँखों से दिखाई देना असम्भव है। इसका अर्थ यह नहीं है कि ईश्वर है ही नहीं। ईश्वर है परन्तु अत्यन्त सूक्ष्म, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी होने के कारण वह दिखाई नहीं देता। वायु भी अणु रूप में है परन्तु वह अणु इतने छोटे होते हैं कि वह भी हमें आँखों से दिखाई नहीं देते, फिर भी हम वायु के अस्तित्व को अपनी बुद्धि व उसके स्पर्श गुण के आधार पर उसका होना स्वीकार करते हैं। इसी प्रकार संसार में ऐसे अनेक पदार्थ हैं, जो अत्यन्त सूक्ष्म हैं परन्तु आँखों से न दिखने पर भी हम उनका अस्तित्व स्वीकार करते हैं।

ईश्वर को जानने के लिए गुण व गुणी का सिद्धान्त अत्यन्त व्यवहारिक प्रतीत होता है। किसी भी पदार्थ को हम उसके गुणों से जानते हैं। गुणी के दर्शन हमें नहीं होते हैं। रसगुल्ले का उदाहरण प्रायः दिया जाता है। रसगुल्ले की आकृति के अनेक पदार्थ होते हैं परन्तु जिसमें रसगुल्ले का पूर्वानुभूत स्वाद हो, उसी को रसगुल्ला कहा जाता है। आकृति व कोमलता के गुण रसगुल्ले के समान होने पर भी उसमें रसगुल्ले का वास्तविक स्वाद आवश्यक है तभी उसे रसगुल्ला कहा जाता है। ईश्वर को यदि जानना व देखना है तो उसके गुणों को देख व जानकर जाना जा सकता है। मनुष्य जो रचनायें करता है उससे उसकी बनाई वस्तु को देखकर पौरुषेय रचनाकार मनुष्य का ज्ञान होता है। इसी प्रकार पुस्तक को देखकर इसके लेखक, मुद्रक, प्रकाशक, क्रेता व विक्रेता आदि का भी ज्ञान होता है। जब हम सृष्टि को देखते हैं तो हमें यह ज्ञात होता है कि इस सृष्टि में विद्यमान असंख्य वा अनन्त सूर्य, चन्द्र, पृथिवी व लोक लोकान्तर आदि हैं जो स्वयं नहीं बन सकते। इन्हें जिसने बनाया व जिसने इन्हें व्यवस्था दी है वह ईश्वर है अन्य कोई नहीं। यह सभी लोक लोकान्तर ईश्वर द्वारा निर्धारित अपने अपने निर्दिष्ट मार्ग पर चल रहे हैं व ईश्वर के प्रयोजन को सफल कर रहे हैं। इस सृष्टि व लोक लोकान्तरों आदि का रचयिता व धारणकर्त्ता केवल सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सर्वशक्तिमान, अनादि, अनुत्पन्न, नित्य व अमर परमेश्वर का होना ही सम्भव है। स्वामी दयानन्द ने इस बात को सिद्धान्त रुप में कहा है। वह लिखते हैं कि रचना विशेष आदि गुणों को देखकर रचयिता का ज्ञान होता है। फूल को देखकर उसकी रचना विशेष आदि गुणों से ईश्वर का प्रत्यक्ष होता है। यदि फूल का अस्तित्व है, उसके गुण, कर्म व स्वभाव सत्य हैं तो फिर उसकी रचना मनुष्येतर सत्ता ईश्वर के द्वारा मानना भी आवश्यक है। मनुष्य फूल उत्पन्न नहीं कर सकते। मनुष्य के अतिरिक्त फूल को बनाने वाली अन्य कोई सत्ता भी नहीं है। अतः मनुष्य, सभी प्राणी व यह सृष्टि ईश्वर के द्वारा बनी है। वही इन सबको धारण व व्यवस्थित किये हुए है।

प्रश्न उठता है कि ईश्वर को संसार बनाने की क्या आवश्यकता थी? इसका उत्तर है कि ईश्वर ने इस सृष्टि से पूर्व अनादि काल से अनन्त बार सृष्टि की रचना की है। वह यह कार्य इसलिये करता है कि उसे सृष्टि बनाने का ज्ञान है और साथ ही सृष्टि बनाने की सामर्थ्य व शक्ति भी उसमें है। ईश्वर यह सब काम सहज स्वभाव से कर सकता है, अतः वह इस सृष्टि को बनाता है। इसके साथ ही यह भी महत्वपूर्ण हैं कि ईश्वर सहित जीवात्मा का भी इस संसार में अस्तित्व है। यह जीवात्मायें भी अनादि काल से हैं। जीवात्मा चेतन व अल्पज्ञ स्वभाव वाले और जन्म-मरण धर्मा है। वह मनुष्य योनि में जन्म लेकर जो शुभ व अशुभ कर्म करते हैं, उसे पुण्य व पाप कहते हैं। ईश्वर न्यायकारी है। वह पक्षपातरहित न्याय करता है। अतः जीवात्मा वा मनुष्यों के कर्मों का सुख व दुःख रुपी फल देना उसे अभीष्ट है। जीवों को उनके पूर्वजन्मों के कर्मों के अनुसार फल देना उसका कर्तव्य व दायित्व है। इस कार्य को करने के लिए ही वह सृष्टि की रचना, वेदों का ज्ञान, जीवात्माओं को उनके कर्मानुसार नाना योनियों में जन्म, सृष्टि का पालन व सृष्टि की प्रलय आदि कार्य करता है। जो लोग वेदाचरण कर मोक्ष को प्राप्त होते हैं उनको मोक्ष सुख भुगाने का दायित्व भी ईश्वर का है। अतः इस सृष्टि पर समग्रता से विचार करने पर इसमें ईश्वर नाम की सत्ता का होना सिद्ध हरेता है। ऋषि दयानन्द आर्यसमाज के दूसरे नियम में ईश्वर के सत्यस्वरूप का वर्णन किया है। यह वर्णन सत्य व यथार्थ है। युक्ति व तर्क संगत भी है। वेद और ऋषि दयानन्द के अनुसार 'ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।' ईश्वर सर्वज्ञ है, जीवों के कर्मों का फल प्रदाता है, वेद ज्ञान का दाता और सृष्टि की पालन व प्रलय करने वाला भी है। हमें उसके उपकारों को स्मरण कर उसका धन्यवाद नित्य प्रति करना चाहिये। हमारी इस चर्चा से संसार में एक सचिच्चदानन्दस्वरूप, निराकार, अतिसूक्ष्म, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वान्तर्यामी, अनादि तथा नित्य सत्ता का होना ज्ञात व सिद्ध होता है। जीवात्मा वा मनुष्य का कल्याण इसी में है कि वह ईश्वर के यथार्थस्वरूप वा गुण, कर्म तथा स्वभावों को जानें और उसकी उपासना से उसका साक्षात्कार करने सहित जन्म व मरण के बन्धनों से मुक्ति प्राप्त कर मोक्ष का आनन्द प्राप्त करे।

- पता- १९६ चुक्खूवाला-२
देहरादून-२४८००१
चलभाष- ०९४१२९८५१२१

आजादी की पूर्व संध्या पर रंगारंग कार्यक्रम

दिनांक १४ अगस्त २०२२ को नवलखा महल में श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास की ओर से आजादी की पूर्व संध्या पर 'देशभक्ति के भावों से ओतप्रोत रंगारंग कार्यक्रम' भारतीय स्टेट बैंक, उदयपुर अंचल के उपमहाप्रबन्धक श्री दिनेश प्रताप सिंह तोमर के मुख्य आतिथ्य में आयोजित किया

गया। इस अवसर पर श्री तोमर ने कहा कि आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों की प्रेरणा से भारत के जनमानस में अंग्रेजी राज को खत्म करने के लिए आन्दोलन की अलख जगी। आजादी के आन्दोलन का नेतृत्व करने वाले तथा अपना जीवन समर्पित करने वाले स्वतंत्रता सैनानी लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानन्द, चन्द्रशेखर आजाद, श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा इत्यादि आर्य समाज की ही प्रेरणा थे।

न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने कहा कि आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती का आजादी के आन्दोलन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अतः नवलखा महल में प्रमुख क्रान्तिकारियों के जीवन्त प्रतीक बनाये जा रहे हैं तथा उनके योगदान को भी प्रदर्शित करने की योजना है जिसके लिए निरन्तर कार्य चल रहा है और अतिशीघ्र यह कार्य पूर्ण हो जायेगा।

कार्यक्रम का प्रारम्भ श्री दिनेश प्रताप सिंह तोमर के सान्निध्य में यज्ञ से किया गया। यज्ञ के पुरोहित श्री नवनीत आर्य थे। इस अवसर पर श्री रवीन्द्र राठौड़ एवं समारोह की अध्यक्षता करते हुए न्यास मंत्री श्री भवानीदास आर्य ने देशभक्ति से ओतप्रोत गीतों की प्रस्तुति दी।

इस अवसर पर श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के संयुक्त मंत्री डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने उपस्थित आर्यजनों से आह्वान किया कि वे अपने घर पर तिरंगा लगायें तथा युवा पीढ़ी में देशभक्ति तथा संस्कारों से युक्त शिक्षा का प्रचार प्रसार करें।

इस अवसर पर उपस्थित आर्यजनों को सुरेश चन्द्र दीनदयाल गुप्त मल्टी मीडिया सेन्टर में देशभक्ति से ओतप्रोत एक लघु फिल्म भी दिखाई गई। समारोह में आर्य समाज व उनसे जुड़ी संस्थाओं के अधिकारी, सदस्य एवं कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

धन्यवाद न्यास के संयुक्त मंत्री डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने ज्ञापित किया। पुरोहित श्री नवनीत आर्य के शांति पाठ के साथ समारोह का समापन हुआ।

– भंवर लाल गर्ग, कार्यालय सचिव

पूरा नाम–
चलभाष–

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०७/२२

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या–

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (द्वादश समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	१ र	१	१ क		२	२ न		३	३ र
४	४ क्ष	४		५	५ पो	५	५ क	५	५
६	६ ह	६	६ ति		७	७ दा	७	७	७ ल

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. खाओ, पीओ, ऐश करो क्योंकि यही लोक है, इससे भिन्न पुनर्जन्म और परलोक कुछ भी नहीं। यह किस मत का कथन है?
२. जब जीव शरीर से पृथक् हो जाता है, तब शरीर में .... कुछ भी नहीं रहता?
३. बौद्ध कितने प्रकार के होते हैं?
४. जो मांस खाना है यह भी वाममार्गी टीकाकारों की लीला है। इसलिए उन्हें क्या कहना उचित है?
५. मृतकों का श्राद्ध तर्पण करना क्या है?
६. चारवाक मत का प्रचारक कौन था?
७. मनुष्यमात्र को किसके अनुकूल चलना उचित है?

''विस्तृत नियम पृष्ठ २५ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ अक्टूबर २०२२

अल्लूरी सीताराम राजू

आदिवासी स्वातंत्र्य प्रिय हैं, उन्हें किसी बन्धन में अथवा पराधीनता में नहीं जकड़ा जा सकता है, इसीलिये जंगलों से ही विदेशी आक्रांताओं एवं दमनकारियों के विरुद्ध उनका यह संघर्ष देश के स्वतंत्र होने तक निरन्तर चलता रहा। आज हम कह सकते हैं कि जंगलों के टीलों से ही स्वाधीनता की योजना का आरम्भ हुआ। यह प्रकृति पुत्र हैं, इसीलिए जंगलों से ही स्वतंत्रता का अलख जगाया। ऐसे प्रकृति प्रेमी आदिवासी क्रान्तिकारियों की लम्बी शृंखला है, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन स्वतंत्रता के संघर्ष में गुजारा। ऐसे ही महान् क्रांतिकारी अल्लूरी सीताराम राजू का जन्म ४ जुलाई १८९७ को विशाखापट्टणम जिले के पांड्रिक गाँव में हुआ।

क्रान्तिकारी, वीर राजू ने स्कूली शिक्षा के साथ-साथ निजी रुचि के तौर पर वैद्यक और ज्योतिष का भी अध्ययन किया और यह अध्ययन उनके व्यवहारिक अभ्यास में भी लगा रहा। इसके कारण ही जब उसने युवावस्था में आदिवासी समाज को अंग्रेजों के खिलाफ संगठित करना शुरू किया तो इन विधाओं की जानकारियों ने उसे अभूतपूर्व सहायता प्रदान की। राजू का पालन-पोषण उसके चाचा अल्लूरी रामकृष्ण के परिवार में हुआ। इनके पिता अल्लूरी वेंकट रामराजू गोदावरी के माग्गूल ग्राम में रहते थे। उन्होंने बाल अवस्था में ही सीताराम राजू को यह बताकर क्रान्तिकारी संस्कार दिए कि 'अंग्रेज ही तो हमें गुलाम बनाए हैं, जो देश को लूट रहे हैं।' इन शब्दों की सीख के साथ ही पिता का साथ तो छूट गया, लेकिन विप्लव पथ के बीज लग चुके थे। युवावस्था में आदिवासियों को अंग्रेजों के शोषण के विरुद्ध संगठित करना शुरू किया, जिसका आरम्भ आदिवासियों का उपचार व भविष्य की जानकारी देने से होता था। यही नहीं इस महान् क्रान्तिकारी ने एक सन्त की तरह दो वर्ष तक सीतामाई नामक पहाड़ी की गुफा में अध्यात्म साधना व योग क्रियाओं से चिन्तन तथा तप किया। यही वह समय था, जब राजू ने आदिवासियों और गिरिजनों की पीड़ा को करीब से जाना। उन्हें उठ खड़ा होने के लिए प्रेरित किया।

राजू के क्रान्तिकारी साथियों में बीरैयादौरा का नाम विख्यात् है। बीरैयादौरा का प्रारम्भ में अपना अलग संगठन था। वह भी आदिवासियों का ही एक संगठन था, जिन्होंने अंग्रेजों से युद्ध छेड़ रखा था। यह बात सन् १९१८ की है। अनन्तर अंग्रेजों ने बीरैयादौरा को एक मुठभेड़ में गिरफ्तार कर लिया, उसे जेल में रखा, लेकिन वह जेल की दीवार कूदकर जंगलों में भाग गया। उसके बाद बीरैयादौरा ने दल से संपर्क जोडकर ब्रिटिश सत्ता से संग्राम जारी रखा। जिसमें वो दोबारा जेल भेज दिए गए। अंग्रेज बीरैयादौरा को फांसी पर लटका देते, परन्तु उस समय सीताराम राजू का संगठन बहुत प्रबल हो चुका था। पुलिस राजू से थरथर कांपती थी। वह ब्रिटिश सत्ता को खुलेआम चुनौती देता था। कैदी बीरैयादौरा के लिए भी उसने अंग्रेज सत्ता को पहले से सूचना भिजवा दी थी कि 'मैं बीरैया को रिहा करवाकर रहूँगा। दम हो तो रोक लेना।' वही हुआ। एक दिन पुलिस दल जब बीरैया को हथकड़ी बेड़ी से कसे अदालत ले जा रहा था, सीताराम राजू ने पुलिस टुकड़ी पर धावा बोला दिया। दोनों तरफ से गोलियाँ चलीं, लेकिन गोलियों की बौछार में भी पुलिस दस्ता राजू का बाल बांका न कर सका और वह दिनदहाड़े खुलेआम लड़कर बीरैयादौरा को छुड़ा ले गया। अंग्रेजी सत्ता के लिए राजू तथा बीरैया की खोज एक समस्या बनी रही। पुलिस छापे विफल होते रहे।

अंग्रेजों ने उसे पकड़वाने के लिए अखबारों व इश्तहारों में दस हजार रु. नगद इनाम का ऐलान किया। सन् १९२२ में यह धनराशि एक बड़ा प्रलोभन था। सीताराम राजू के संघर्ष और क्रान्ति की सफलता का एक कारण यह भी था कि आदिवासी अपने नेता को धोखा देना, उनके साथ विश्वासघात करना नहीं जानते थे। कोई भी सामान्य व्यक्ति मुखबिर या गद्दार नहीं बना। आन्ध्र के रम्पा क्षेत्र के सभी आदिवासी राजू को भरसक आश्रय, आत्मसमर्थन देते रहते थे। स्वतंत्रता संग्राम की उस बेला में उन भोलेभाले गृहहीन, वस्त्रहीन व सर्वहारा समुदाय का कितना बड़ा योगदान है कि अंग्रेजों के कोड़े खाकर, लातघूंसे खाकर भी राजू को पकड़वा देना उन्हें स्वीकार नहीं हुआ। यही कारण है कि आज भी गोदावरी पार रम्पा क्षेत्र में कोई आदमी विश्वास नहीं करता कि राजू कभी पकड़ा गया था और उसे ईस्ट कोस्ट स्पेशल पुलिस के चीफ कुंचू मेनन ने गोली मार दी।

क्रान्तिकारी बीरैया को ब्रिटिश कैद से रिहा करा लेने पर दोनों क्रान्तिकारी राजू और बीरैया एकजुट हो गए, एक साथ काम करने लगे। अब राजू की शक्ति दुगुनी हो गई। दो अन्य क्रान्तिकारी गाम मल्लू दौरा और गाम गन्टन दौरा भी राजू के दल में आ मिले। चारों के संयुक्त छापेमारी के सिलसिले ऐसे चले कि अंग्रेज दमनकारी त्रस्त हो उठे। वे राजू का एक भी आदमी न तो मार सके न गिरफ्तार कर सके और राजू अनेक वर्षों तक अंग्रेज सत्ता को नाकों चने चबवाता रहा। क्रान्तिकारी सीताराम राजू ने आन्ध्र क्षेत्र के सैकड़ों नौजवानों में क्रान्ति की अलख जगाई थी। राजू के कहने पर नौजवान साथ खड़े हो जाते थे, जिसके ऐतिहासिक प्रमाण १९२८ और १९२९ के आन्ध्र में तेलुगु में प्रकाशित साप्ताहिक अखबार कांग्रेस में मौजूद हैं। सम्पादक पदूरि अन्नपूर्णय्या ने लिखा है कि आन्ध्र के नौजवानों ने अगर किसी व्यक्ति के निर्देशन में अंग्रेजों से लड़ाई जारी रखी तो वह सीताराम राजू ही था और आन्ध्र के इतिहास में वह प्रथम संग्राम था।

विप्लव पथ का पथिक बनकर क्रान्तिकारी राजू ने अपना संगठन खड़ा करने के साथ उत्तराखण्ड के क्रान्तिकारियों से सम्पर्क किया। यही नहीं गदर पार्टी के नेता बाबा पृथ्वी सिंह को दक्षिण भारत की राज महेन्द्री जेल से छुड़ाने का भरसक प्रयास किया। सीताराम राजू गुरिल्ला पद्धति से युद्ध करते और नल्लईमल्लई पहाड़ियों में अन्तर्ध्यान हो जाते। गोदावरी नदी के पास फैली यह पहाड़ियाँ राजू व उसके साथियों की आश्रयदात्री व प्रशिक्षण केन्द्र दोनों थी। यहीं वे युद्ध के गुर सीखते, अभ्यास करते व आक्रमण की रणनीति बनाते। इसी जगह को रम्पा

कहा जाता था। राजू द्वारा चकमा देकर पहाड़ियों में विलुप्त हो जाने की वजह से अंग्रेज उन्हें रम्पा फितूरी कहते थे। ब्रिटिश अफसर राजू से लगातार मात खाते रहे। आन्ध्र की पुलिस राजू के सामने व्यर्थ साबित हो चुकी थी। अन्त में केरल की मलाबार पुलिस के दस्ते राजू पर लगाए गए, क्योंकि उन्हें पर्वतीय इलाकों में छापे मारने का अनुभव था। १२ अक्टूबर १९२२ को नल्लईमल्लई की पहाड़ियों की घाटी में ये दस्ते रवाना किए गए। मलाबार पुलिस फोर्स से राजू की कई मुठभेड़ें हुईं। इनमें मलाबार दस्तों को मुँह की खानी पड़ी। उसके बाद भी पुलिस राजू को गिरफ्तार नहीं कर सकी।

६ मई १९२४ को राजू के दल का मुकाबला सुसज्जित असम राइफल्स से हुआ, जिसमें उसके साथी शहीद हो गए, पर राजू बचा रहा। अब ईस्ट कोस्ट स्पेशल पुलिस उसे पहाड़ियों के चप्पेचप्पे में खोज रही थी। ७ मई १९२४ को जब वह अकेला जंगल में भटक रहा था, तो सहसा उसकी खोज में वन पर्वतों को छानते फिर रहे फोर्स के अफसर की नजर राजू पर पड़ गई। उसने राजू का छिपकर पीछा किया। यद्यपि वह राजू को पहचान नहीं सका था, क्योंकि उस समय राजू ने लम्बी दाढ़ी बढ़ा ली थी। पुलिस दल ने राजू पर पीछे से गोली चलाई। राजू जख्मी होकर वहीं गिर पड़े। तब राजू ने स्वयं अपना परिचय देते हुए कहा कि 'मैं ही सीताराम राजू हूँ' गिरफ्तारी के साथ ही यातनाएँ शुरू हुईं। अंततः उस महान् क्रान्तिकारी को नदी किनारे ही एक वृक्ष से बाँधकर भून दिया गया। एक क्रान्तिकारी की इससे श्रेष्ठ शहादत और क्या हो सकती थी? इस बलिदान के साक्ष्य थे गोदावरी नदी और नल्लईमल्लई की पहाड़ियाँ, जहाँ आज भी अल्लूरी सीताराम राजू जिन्दा है। आदिवासियों की आत्मा में देवता स्वरूप। लोकगीतों में लोकनायक के रूप में।

गाँधीजी ने राजू के लिए ठीक ही कहा था कि 'उस वीरात्मा का त्याग बलिदान, मुसीबतों भरा जीवन, सच्चाई, सेवा भावना, लगन, निष्ठा और अदम्य हिम्मत हमारे लिए प्रेरणाप्रद है।'

सुभाषचन्द्र बोस ने कहा था 'देशवासी उस अप्रतिम योद्धा के सम्मान में विनत हों। उसकी समर्पण भावना देशानुराग, असीम धीरज और पराक्रम गौरव गरिमा मण्डित है।'

साभार- विकीपीडिया

भूत से साक्षात्कार

भूत से सीधे साक्षात्कार करते समय किन मुसीबतों का सामना करना पड़ सकता है, इसका बड़ा अच्छा सबक हमें तब मिला जब महादेव चह्वाण नामक तांत्रिक ने भूत-पिशाच दिखाने की चुनौती स्वीकार की।

असल में महादेव चह्वाण का पता सांगली जिले के हमारे कार्यकर्त्ताओं को ज्योतिषी क्षितिज शिंदे ने बताया। क्षितिज शिंदे सांगली के एक समाचार-पत्र में भूतों पर एक सीरीज चला रहा था। उसके लेखों के 'भूत के जन्मदाता ब्रह्मचारी' 'कम्युनिस्ट भूत' जैसे शीर्षक चक्कर में डालने वाले थे। उसकी राय के मुताबिक विश्व की ७० से ८० फीसदी दुर्घटनाएँ दुष्ट पिशाच की बाधा से होती हैं। स्त्री के पास यदि पूर्व जन्म के पुण्य का संचय नहीं है, तो वह चुड़ैल या पिशाच भूत की योनि में चली जाती है। अवैध सम्बन्धों से पुत्र प्राप्ति करनेवाली स्त्री यदि प्रसूति के समय मृत हुई, तो पिशाच योनि में जाकर अपने शिशु की तलाश करती है। ब्राह्मण की मृत्यु हुई तो वह ब्रह्मराक्षस बनता है और यदि लालची या लोभी ब्राह्मण की मृत्यु हुई तो वह 'ब्रह्मसमंध' (ब्रह्मपिशाच) बनता है। सदियों पूर्व के भूत आज भी घूमते हुए नजर आते हैं। वे वायु रूप में रहते हैं। लेकिन अदृश्य रूप में भटकते हुए वे पीड़ा दे सकते हैं। अनगिनत जीवात्मा (सिरिट्स) हमारे आस-पास मँडराते रहते हैं। हमसे एक हाथ की दूरी पर उनके सूक्ष्म जीव कार्यरत रहते हैं। हमारे शरीर की ऊर्जा को वे चूसते हैं। भूतों के विश्व में 'साम्यवाद' रहता है। सारे भूत समान हैं। लेकिन अच्छे भूत मार्गदर्शन करते हैं, जबकि बुरे भूत मांत्रिक से वशीभूत होकर अपनी वासनाओं के प्रतिशोध की पूर्ति करते हैं।

यह सब पढ़कर 'भूत दिखाओ, पाँच लाख रुपये पाओ' का समिति का आह्वान रजिस्टर्ड पोस्ट से क्षितिज शिंदे के घर पहुँचा और एक महीने तक उसके उत्तर की राह देखकर सांगली जिले के अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के छह कार्यकर्त्ताओं ने डॉ. प्रदीप पाटील के नेतृत्व में क्षितिज शिंदे के घर दस्तक दी। हम भूत देखने आए हैं, यह कार्यकर्त्ताओं का पैतरा था, जबकि क्षितिज शिंद को भूतों पर पक्का विश्वास था। उसका मानना था कि उसका गुरु हमेशा भूतों के साथ रहता है। विशेष मंत्र शक्ति द्वारा वह भूतों को काबू में रखता है। वह हमें भूतों को दिखाता है। साथ ही लोगों की भूतबाधा को दूर करता है। इतना सब सुनकर सीधे उससे मिलना ही तय हुआ।

जयसिंगपुर से चार-पाँच किलोमीटर की दूरी पर 'खंजिरे मठ्ठा' नाम की एक बस्ती थी। प्रत्यक्षतः खेती बहुत कम थी, बस कुछ एक लोग वहाँ रह रहे थे। इसके इर्द-गिर्द कई उतार-चढ़ाव, गड्ढों तथा बड़े-बड़े पत्थरों से भरी हुई बंजर भूमि थी। इसी बंजर भूमि पर खंजिरे मठ्ठ के नजदीक महादेव चह्वाण का खपरैल घर था। घर क्या, २०० वर्ग फीट का एक विशाल कमरा ही था। दीवारें कच्ची थीं और टट्टी भी थीं। नाथ सम्प्रदाय के इस मांत्रिक की आयु पैंसठ वर्ष की थी। सिर के बाल सफेद और गुच्छेदार सफेद मूँछें भी थीं। बड़ी आँखें, गरजने वाली आवाज, सिर पर धोती और बंडी, माथे पर बड़ा तिलक, सामने जलती हुई धूप, एक ओर काले मोटे दोर की गठरी, मंत्र-तंत्र के चौकोर कागज। शंकर और कृष्ण की तस्वीरों से दीवारें ढँकी हुई थीं।

समिति के कार्यकर्त्ता सामने बैठे। क्षितिज शिंदे ने कहा, 'ये अंधश्रद्धा निर्मूलन वाले लोग हैं, इन्हें भूत देखना है।'

गुरु ने गरजकर कहा, 'दिखाएँगे भूत, अभी दिखाता हूँ, लेकिन भूतों को काबू में रखने वाले चार लड़के आज यहाँ नहीं हैं, बाजार गए हैं।'

प्रदीप ने पूछा, 'भूत कैसे होते हैं?'
'हमें छोड़ों, विश्व में आज तक किसी ने भी भूत को नहीं देखा है।' शिंदे बताते हैं, 'आप तो भूतों के साम्राज्य में रहते हैं। तो फिर बताएँ, भूत होते कैसे हैं?'
'राक्षस के जैसा मुँह होता है।' गुरु चह्वाण ने कहा।
इसके पच्चीस-तीस भक्तगण जो हमारे पीछे बैठे थे, वे चिल्लाए, 'हाँ-हाँ, इन्होंने हमें भी दिखाया है भूत...'
'उसका शरीर हाथ-पाँव कैसे होते हैं?'
'तुम्हारे-हमारे जैसे ही। घूमते हैं इधर-उधर...' 'कार्यकर्त्ताओं के साथ आए 'दैनिक सकाल' के चिन्तामणि सहस्त्रबुद्धे ने कहा, 'तो फिर कब दिखाएँगे भूत?'
'बृहस्पतिवार के दिन आओ, भूत दिखाएँगे।'
भूत दिखाने का समय तय हुआ- बृहस्पतिवार, सुबह ग्यारह बजे। सभी समाचार पत्रों में खबरे छपीं : 'सावधान! आनेवाले बृहस्पतिवार के दिन भूत के दर्शन होंगे। मांत्रिक महादेव चह्वाण प्रत्यक्ष भूत दिखाएँगे।
समिति की सांगली शाखा में पत्रों का ढ़ेर लग गया। कार्यकर्त्ताओं को भी लगा कि सभी लोगों को आना चाहिए। भूत सचमुच होता है या नहीं, इसका आमने सामने फैसला एक बार हो ही जाए।

लोगों के मन का भ्रम दूर होगा। नहीं तो कम से कम इस भ्रम को धक्का तो लगेगा। इसी उद्देश्य से कार्यकर्त्ताओं ने सारी चुनौतियों को सरेआम प्रदर्शित किया। 'चलो भूत देखने' की चर्चा से माहौल गरम हो उठा। सभी ओर एक ही चर्चा, भूत दिखाई देगा या नहीं। खंजिरे मठ्ठा जिस पुलिस थाने की सीमा में था, वहाँ कार्यकर्त्ताओं ने जाकर सुरक्षा हेतु विधिवत् अर्जी दी और पुलिस द्वारा पुख्ता बंदोबस्त रखने की माँग की।
भूतदर्शन के कार्यक्रम में ऐन वक्त पर कुछ मुद्दों पर शिकायत न हो, इसलिए एक दिन पहले डॉ. शीतल भरगुड़े और डॉ. प्रदीप पाटील एक बार क्षितिज शिंदे से मिले। महादेव चह्वाण की ओर से क्षितिज शिंदे ही सब कुछ देख रहा था। क्षितिज शिंदे को दो बार निवेदन पढ़कर सुनाया गया, जो इस प्रकार था-
१. मांत्रिक ने बताया है कि तथाकथित भूत दृश्य रूप में मनुष्य की तरह दिखावा करनेवाला, राक्षस जैसे मुँह वाला होता है। इस वर्णन के सिवाय कोई भी भूत, 'भूत' नही रहेगा।
२. मांत्रिक चह्वाण ने समिति को दूसरी चुनौती दी थी कि 'मैं जिस भूत को बुलाऊँगा, वह भूत आप में से किसी के भी घर का, घर की वस्तुओं का बड़ी सफाई से वर्णन करेगा। 'समिति के पाँच कार्यकर्त्ताओं के उपर्युक्त वर्णन कागजबन्द लिफाफों में रखे जाएँगे और भूत के बताने के बाद हर एक लिफाफा खोला जाएगा। यदि लिफाफे में रखे विवरण भूत के बताए वर्णन से पूरी तरह मेल खाएँगे तो इससे भूत के होने की पुष्टि हो जाएगी।
३. भूत दिखाई देने पर समिति द्वारा एक बार फिर उसकी जाँच की जाएगी और भूत दिखाई न देने पर क्षितिज शिंदे और चह्वाण को भूत दिखाने का एक और मौका दिया जाएगा।
अंतिम मुद्दा था कि भूत का अस्तित्व मांत्रिक इस तरीके से दिखाएगा-
१. ताली बजाकर।
२. समिति के कार्यकर्त्ताओं को हानि पहुँचाकर।
क्षितिज शिंदे की यह शक्ति अस्थायी थी। शाम के सात बजे सभी समाचार पत्रों से डॉ. प्रदीप पाटील को फोन आए कि क्षितिज शिंदे ने समिति द्वारा शर्तें रखने के कारण कार्यक्रम स्थगित करने की घोषणा की है। अलबत्ता समिति द्वारा सभी समाचार-पत्रों को तुरन्त सफाई दी गई कि भूत देखने के लिए समिति खंजिरे मठ्ठा जायेगी ही। महादेव चह्वाण ने समिति को वचन दिया है और वे उस पर कायम रहेंगे, ऐसा समिति को भरोसा है।
इस रोमांचक नाटक में शामिल होने के लिए मैं सुबह दस बजे जयसिंगपुर बस स्टेण्ड पर पहुँचा। जयसिंगपुर से खंजिरे मठ्ठा की ओर जाते समय मुझे थोड़ा अंदेशा होने लगा कि पता नहीं, आगे क्या होने वाला है। गाँव से लोगों के झुण्ड खंजिरे मठ्ठा की ओर जा रहे थे। जब मैं वहाँ पहुँचा तो उसे विस्तृत बंजर भूमि पर दो-तीन हजार साइकिलें और कुल सात-आठ हजार लोग जमा थे। मेरे वहाँ पहुँचने तक हमारे कार्यकर्त्ता विजय-मेला शुरु करने की तैयारी में जुट चुके थे।
विजय चह्वाण ने इतनी भारी भीड़ की अपेक्षा नहीं की थी। यहाँ चल रही गतिविधियों को देखकर उसने पूरी तरह से पीछे हटने का पैंतरा अपनाया। उसने स्पष्ट रूप से कुबूल किया, 'भूत प्रेत कुछ नहीं होते। मुझसे गलती हुई है।'
प्रदीप पाटील ने कहा, 'भीड़ के सामने जाकर कहो कि 'मैने झूठ कहा, मुझे माफ करें।'
चह्वाण इसके लिए राजी हो गया। अपने आगे खड़ी भारी भीड़ के सामने वह भुनभुनाया, 'माफ करें, भूत नही होता।' और दौड़कर अपने कमरे में चला गया।
यह सब घटित होने तक मैं वहाँ पहुँच गया था। महादेव चह्वाण से यह सब लिखित रूप में लेने की बात मैंने उठाई। अन्दर जाकर उससे ऐसा लिखवा भी लिया। मैंने सोचा कि बाहर जाकर लोगों को यह लिखित कबूलनामा सुनाऊँगा। दो कारणों से यह सम्भव न हुआ। एक तो हमारे पास लाउड स्पीकर नहीं था और विस्तीर्ण

बंजर भूमि पर गले की आवाज पहुँचना सम्भव न था। दूसरी बात यह कि लोगों को इस इकरारे जुर्म में तनिक भी रस नहीं था। उन्हें भूत देखना था और इसी अपार उत्साह से वे केवल सांगली, कोल्हापुर से नहीं बल्कि दूर-दूर रत्नगिरि, उस्मानाबाद से मुँह अन्धेरे इस बंजर भूमि पर आए थे। 'मैं भूत नहीं दिखा सकता' वाला महादेव चह्वाण का कबूलनामा बेशक समिति की दृष्टि से बहुमूल्य था लेकिन भूत देखने के लिए जुटे उत्साही लोगों की दृष्टि में वह एक कौड़ी का भी न था। फँसाये जाने का उन्हें बहुत गुस्सा था। इसी कारण वे एक ही अनुरोध कर रहे थे कि 'महादेव चह्वाण को बाहर बुलाइए। उसे ही कबूलनामा पढ़ने दें। हमें उससे ही प्रश्न पूछने हैं।' लेकिन गुस्से से बेकाबू भीड़ की माँग को स्वीकृति देना अक्लमंदी की बात नहीं थी। हमें 'भूत नहीं' के इकरारे जुर्म में रस था। यह संघर्ष वैचारिक था और यहाँ तो गुस्से से बेकाबू जनता द्वारा चह्वाण को ही 'भूतयोनि' में भेजने का खतरा स्पष्ट रूप से नजर आ रहा था।

स्वाभाविक रूप से अब चह्वाण की सुरक्षा की जिम्मेदारी समिति पर आ चुकी थी। हमने पुलिस थाने में सन्देश भेजा। कुरूंदवाड़ समिति के कार्यकर्त्ताओं ने महादेव चह्वाण के घर के बाड़ के चारों ओर घेरा बनाया। उससे बेकाबू भीड़ को घर में घुसने से रोकना सम्भव हुआ। मैं और प्रदीप पाटील घर में जाकर महादेव चह्वाण को ढ़ाँढ़स बँधा रहे थे। पुलिस नहीं आ रही थी और वातावरण में पल-पल तनाव बढ़ रहा था। इसका हल क्या निकले तथा परिस्थिति को कैसे नियंत्रित करें, इसका समाधान किसी को भी सूझ नहीं रहा था। आखिरकार भीड़ में से किसी ने एक पत्थर उठाकर महादेव चह्वाण के घर की ओर दे मारा। भीड़ को तुरन्त ही एक उपाय मिल गया। कई हजार खाली हाथों और अनगिनत पत्थरों से अंत में क्या होगा, यह स्पष्ट दिखाई दे रहा था। घर के

आधे से अधिक खपरैल चकनाचूर हो गए। महादेव चह्वाण के घर की तीनों औरतें वहीं थीं। पत्थरों ने उनके सिर को निशाना बनाया। उनके सिर जख्मी हो गए। खून बहने लगा। हमें आगे के भीषण भविष्य का अंदाजा हो गया था। इतने में कहीं से 'पुलिस आई, पुलिस आई' का शोरगुल हुआ। पथराव थोड़े समय के लिए रुक गया। पुलिस आई थी, यह सच था पर वह बिल्कुल अकेली थी। बताया गया कि थाने के निरीक्षक, सहायक निरीक्षक तथा अधिकतर पुलिस किसी चीनी मिल की चुनावी सुरक्षा के लिए गए थे। पुलिस थाने में केवल दो ही हवलदार थे और उनमें से आधी फोर्स उन्होंने हमारे यहाँ भेजी थी। पुलिस दिखाई देने पर स्वाभाविक रूप से लोगों को लगा कि तुरन्त ही पीछे से और व्यवस्था आ रही है। कुछ समय के लिए रुके हुए पथराव का लाभ उठाकर कमरे की घायल औरतें पीछे की दिशा में रहने वाली खंजिरे मट्ठ की बस्ती की ओर भाग गईं। अकेले सिपाही को परिस्थिति देखकर इस बात का अन्दाजा आया कि यह अकेले के बस की बात नहीं। वह उल्टे पाँव पीछे लौट आया।

खंजिरे बस्ती के मुट्ठीभर लोगों से अपनी बस्ती की औरतों का बहता हुआ खून देखा नहीं गया। वे गुस्से से आपा खो बैठे और 'खून का बदला खून' से लेने वाले अंदाज में सामनेवाले जनसमूह पर पथराव शुरू कर दिया। पथराव रोक चुके लोगों को इस हमले ने बहाना दे दिया। पुलिस को लौटते हुए वे देख चुके थे। इसके चलते उन्होंने भी 'ईंट का जवाब पत्थर से' देने की नीति अपनाई।

महादेव चह्वाण के घर में लोग न घुस जाएँ, इसलिए वहाँ रुके समिति के कार्यकर्त्ताओं पर दोनों ओर से पत्थरों की वर्षा होने लगी। घर के हर खपरैल के टुकड़े-टुकड़े हो गए। पत्थर सीधे अन्दर आने लगे। घर के लोगों का बचाव करने के लिए अन्दर बैठे मैं और प्रदीप पाटील ने सिर पर पीतल की बाल्टी, हण्डी लेकर अपने आपको बचाया। ऊपर से आनेवाले पत्थर बर्तनों पर गिरकर टन-टन की आवाज कर रहे थे। आखिरकार हिन्दी सिनेमा की तरह अन्तिम क्षण में पुलिस की गाड़ी आई। परिस्थिति की गंभीरता को देखकर किसी भी प्रकार का रास्ता नहीं दिखने पर भी वे जीप को जितना सम्भव हो सका महादेव चह्वाण के घर के दरवाजे के नजदीक ले आए। हमने महादेव चह्वाण को घर से बाहर निकाला। उसे चोट न पहुँचे इसलिए कड़ी सुरक्षा में उसे गाड़ी में पहुँचाया और गाड़ी पुलिस थाने पहुँच गई।

पुलिस थाने में एक सहायक निरीक्षक बैठा था। उसने संक्षेप में कहानी सुनी। उसे इस मामले में दिन दहाड़े भीड़ द्वारा डाले गए डाके का नजारा नजर आया। हमारे खिलाफ महादेव चह्वाण के रूप में गवाह था ही, इसी कारण हमें थाने में बैठने की धमकी देकर घटना का 'आँखों देखा हाल' देखने व घटना स्थल की ओर रवाना हुआ। परिस्थिति की गम्भीरता को हमने भाँप लिया था। फौजदारी मुकदमे की सम्भावना अटल थी। महादेव चह्वाण के घर की क्षति में महिलाओं का घायल होना आदि कारण हमारी ओर ही इशारा कर रहे थे। भीड़ हट गई थी और निर्दोष बरी होने का भरोसा होने पर भी फौजदारी मुकदमे में तीन-चार साल तक कोर्ट का चक्कर लगाने का आसार नजर आ रहे थे।

'गरज पागल होती है' जैसे यह सच था वैसे ही 'गरज से अक्ल आती है' भी सच था। हमारी समझ में आया कि इस मामले में महादेव चह्वाण ही हमें बचा सकता है। यदि उसने किसी भी प्रकार की शिकायत न होने का जवाब दिया तो मुकदमा दायर ही नहीं

होगा। हमने महादेव चह्वाण से यह बात की। हमने उसे समझाया कि हमारा झगड़ा उससे नहीं, भूत से है। उसे हमने ही बचाया था और इसे वह देख भी रहा था। उसकी माँग इतनी ही थी कि हम उसे घर पर खपरैल छत बहाल करें। हमने झट से इसे स्वीकृति दी। मुझे लगा कि उसके मन में एक अज्ञात सा डर बसा था। इकट्ठी हुई भारी भीड़ को वह हमारी शक्ति समझ बैठा। उसे लगा होगा कि यदि हमारे ऊपर मुकदमा दायर किया तो मुकदमे की सुनवाई के दिन भी इतनी भारी भीड़ के रोष का सामना करना पड़ेगा।

पुलिस उपनिरीक्षक वापस आए। उसके साथ उस थाने के पुलिस निरीक्षक भी थे। वे कबड्डी के खिलाड़ी के रूप में मुझे अच्छी तरह से पहचानते थे, आदर करते थे। साथ ही हमारे आन्दोलन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते थे। एक ओर यह सहानुभूति, दूसरी ओर किसी भी प्रकार की शिकायत न होने का महादेव चह्वाण का बयान, दोनों कारणों से मुकदमा दायर न करने का निर्णय हुआ। हम तुरन्त गाड़ी में बैठकर वहाँ से चल दिए। हमारी गाड़ी वहाँ से बाहर निकली और तीनों घायल औरतों को लेकर महादेव चह्वाण के रिश्तेदारों को पुलिस थाने में घुसते हुए देखा। वहाँ क्या हुआ, इसका हमें पता न चला लेकिन इतना पक्का था कि हमारी गाड़ी वहाँ से बाहर निकलने में दो मिनट की देरी होती तो फिर सीन बदलने की सम्भावना थी।

लेखक- स्मृतिशेष डॉ. नरेन्द्र दाभोलकर
संपादक- डॉ. सुनील कुमार लावटे, अनुवादक- प्रकाश कांबले
साभार- अंधविश्वास उन्मूलन 'आचार'

विश्व भर से आने वाले पर्यटकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

आज नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर आये और आर्य समाज और भारतीय संस्कृति के बहुत से पक्षों से अवगत हुए। जो एक बहुत ही विशिष्ट अनुभव था और जानकारी से भरपूर था। संस्था का कार्य अत्यन्त सराहनीय है। हम धन्यवाद देते हुए संस्था के उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं। - सपना राजोरिया

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

उदयपुर के गुलाबबाग के अन्दर सच में अगर कुछ देखने का स्थान है तो वह है नवलखा महल का म्यूजियम। जहाँ पर संपूर्ण विश्व का इतिहास है। सारा भारतीय संस्कृति का इतिहास बस कुछ चित्रों में ही समाहित कर दिखाया गया है। यहाँ पर आकर पता चला कि हम कितने अंधविश्वास में थे। धन्यवाद।

- पूजा रानी, श्रीगंगानगर

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

नवलखा महल के भारतीय दर्शन एवं संस्कृति को आत्मसात कराने वाला अद्वितीय स्थान है। मानव जीवन के संस्कारों को अभिलक्षित करने की चित्रात्मक शैली बेहद प्रशंसनीय है। यह स्थान बहुत ही सुन्दर एवं ज्ञानवर्द्धक है। यहाँ पर एक बार प्रत्येक व्यक्ति को इस स्थान पर आके अपनी भारतीय संस्कृति से जुड़ने का प्रयास अवश्य करना चाहिए।

- नरेन्द्र कुमार जैन-सहायक निदेशक, राजस्थान समग्र शिक्षा-जयपुर

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें "सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

शिक्षा में संस्कृत अनिवार्य करें

गुजरात के शिक्षामंत्री से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कुछ प्रमुख कार्यकर्त्ताओं ने अनुरोध किया है कि वे अपने प्रदेश में संस्कृत की अनिवार्य पढ़ाई शुरु करवाएँ। यह माँग सिर्फ संघ के स्वयंसेवक ही क्यों कर रहे हैं और सिर्फ गुजरात के लिए ही क्यों कर रहे हैं? भारत के हर तर्कशील नागरिक को सारे भारत के लिए यह माँग करनी चाहिए, क्योंकि दुनिया में संस्कृत जैसी वैज्ञानिक, व्याकरण सम्मत और समृद्ध भाषा कोई और नहीं है। यह दुनिया की सबसे प्राचीन भाषा तो है ही, शब्द भण्डार इतना बड़ा है कि उसके मुकाबले दुनिया की समस्त भाषाओं का सम्पूर्ण शब्द-भण्डार भी छोटा है। अमेरिकी संस्था 'नासा' के एक अनुमान के अनुसार संस्कृत चाहे तो १०२ अरब से भी ज्यादा शब्दों का शब्दकोश जारी कर सकती है, क्योंकि उसकी धातुओं, लकार, कृदन्त और पर्यायवाची शब्दों से लाखों नए शब्दों का निर्माण हो सकता है। संस्कृत की बड़ी खूबी यह भी है कि उसकी लिपि अत्यन्त वैज्ञानिक और गणित के सूत्रों की तरह है। जैसा बोलना, वैसा लिखना और जैसा लिखना, वैसा बोलना। अंग्रेजी और फ्रेंच की तरह संस्कृत हवा में लट्ठ नहीं घुमाती है। 'नासा' ने अपने वैज्ञानिक अनुसन्धानों और कम्प्यूटर के लिए संस्कृत को सर्वश्रेष्ठ भाषा बताया है। संस्कृत सचमुच में विश्व भाषा है। इसने दर्जनों एशियाई और यूरोपीय भाषाओं को समृद्ध किया है। संस्कृत को किसी धर्म-विशेष से जोड़ना भी गलत है। संस्कृत जब प्रचलित हुई, तब पृथ्वी पर न तो हिन्दू, न ईसाई और न ही इस्लाम धर्म का उदय हुआ था। संस्कृत भाषा किसी जाति-विशेष की जागीर नहीं है। क्या उपनिषदों का गाड़ीवान रैक्व ब्राह्मण था? संस्कृत को पढ़ने का अधिकार हर मनुष्य को है। औरंगजेब के भाई दाराशिकोह क्या हिन्दू और ब्राह्मण थे? उन्होंने ५० उपनिषदों का संस्कृत से फारसी में अनुवाद 'सिर्रे अकबर' के नाम से किया था। अब्दुल रहीम खानखाना ने 'खटकौतुकम' नामक ग्रन्थ संस्कृत में लिखा था। तेहरान विश्वविद्यालय में मेरे एक साथी प्रोफेसर कुरान शरीफ का अनुवाद संस्कृत में करने लगे थे। कुछ ईसाई विद्वानों ने संस्कृत 'ख्रीस्त गीता' और 'ख्रीस्त भागवत' भी लिखी है। कुछ अंग्रेज विद्वानों ने अब से लगभग पौने २०० साल पहले बाइबिल का संस्कृत अनुवाद 'नूतनधर्म्मनियमस्य ग्रन्थसंग्रहः' के नाम से प्रकाशित कर दिया था। लगभग ४० साल पहले पाकिस्तान में मुझे एक पुणे के मुसलमान विद्वान् मिले। मैं उनके घर गया। वे मुझसे लगातार संस्कृत में ही बात करते रहे। भारत में पण्डित गुलाम दस्तगीर और डॉ. हनीफ खान जैसे संस्कृत के विद्वानों से मेरी पत्नी डॉ. वेदवती का सतत् सम्पर्क बना रहा। अलीगढ़ मुस्लिम वि.वि. की संस्कृत पण्डिता डॉ. सलमा महफूज ने ही दाराशिकोह के 'सिर्रे अकबर' का हिन्दी अनुवाद किया है। लाहौर के प्रोफेसर ख्वाजा दिल मुहम्मद ने १९४४ में भगवद् गीता का उर्दू में पद्यानुवाद किया था। अभी भी मेरे कई परिचित मुसलमान मित्र विभिन्न विश्वविद्यालयों में संस्कृत के आचार्य हैं। इसीलिए मेरा निवेदन है कि संस्कृत को किसी मजहब या जाति की बपौती न बनाएँ। जरुरी यह है कि भारत के बच्चों को संस्कृत, उनकी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा हिन्दी ११वीं कक्षा तक अवश्य पढ़ाई जाए और फिर अगले तीन साल बी.ए. में उन्हें छूट हो कि वे अंग्रेजी या अन्य कोई विदेशी भाषा पढ़ें। कोई भी विदेशी भाषा सीखने के लिए तीन साल बहुत होते हैं। उसके कारण हमारे बच्चों को संस्कृत के महान् वरदान से वंचित क्यों किया जाए?

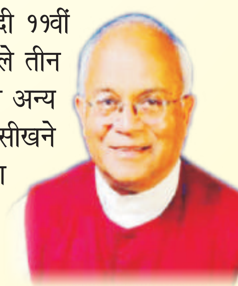

- डॉ. वेदप्रताप वैदिक

पत्नी अमृत फल के रूप में

कथा सरित

वस्तुतः गृहस्थ पत्नी के ऊपर निर्भर होता है। वह अबला नहीं सबला है। वह अमृत फल है गृहस्थ को जीवन देने वाली शक्ति है।

एक सज्जन अमृत फल की तलाश में निकले। उन्हें जिस गाँव का और घर का पता दिया गया था वह उस गाँव में उस घर के द्वार पर पहुँचकर अमृत फल को प्राप्त करने की याचना करने लगे। गृहस्वामी द्वार पर आये। उन्होंने कहा ठीक है। आपको किसी ने सही पता दिया है। अमृत फल हमारे यहाँ है किन्तु वह मेरे बड़े भाई के पास मिलेगा। पथिक आश्चर्य चकित था कि जब वह स्वयं इतने वृद्ध हैं तो क्या इनसे भी कोई और बड़ा भाई होगा?

पथिक गृहस्वामी के निर्देशानुसार उनके बड़े भाई के द्वार पर पहुंचे और अमृत फल प्राप्त करने की जिज्ञासा प्रकट की। द्वार पर जो गृहस्वामी आये वह पहले गृहस्वामी से स्वस्थ थे फिर भी वृद्धता के कुछ लक्षण उनमें थे। उन्होंने कहा ठीक है आपको मेरे छोटे भाई ने मेरे पास भेजा है अमृत फल तो है किन्तु वह मुझसे से भी बड़े भाई के पास मिलेगा। पथिक का आश्चर्य बढ़ता जा रहा था। वह निर्देशानुसार तीसरे गृहस्वामी के द्वार पर गये। आवाज दी, गृहस्वामी द्वार पर आये तो पथिक देखकर आश्चर्यचकित हो गया कि जिसे सबसे बड़ा भाई कहा गया वह तो सर्वथा जवान है। वृद्धत्व का काई चिह्न उसके शरीर पर नहीं है। जब पथिक ने अमृत फल की जिज्ञासा की तो गृहस्वामी ने आश्वस्त किया। हाँ अमृत फल मेरे यहाँ है। तुरन्त गृहस्वामिनी आईं। अतिथि को अन्दर ले गईं। शीतल पेय और भोजन के साथ अपनी अमृतमयी वाणी से गृहदेवी ने अतिथि को तृप्त कर दिया। कई दिन हो गये पथिक गृहदेवी के मधुर व्यक्तित्व और आतिथ्य से तो अत्यन्त प्रसन्न था किन्तु उसे अमृत फल अभी तक नहीं मिला। पथिक ने गृहस्वामी से जिज्ञासा पुनः की भाई आपके यहाँ अमृत फल है तो उसे मुझे दिखाओ। गृहस्वामी ने अपनी पत्नी को लक्ष्य करके पथिक से कहा आप इतने से भी नहीं जान सके। मेरा अमृत फल यही मेरी पत्नी है। उन्होंने आगे कहा-

निःसन्देह मैं तीनों भाइयों में सबसे बड़ा हूँ परन्तु मेरे सुन्दर स्वास्थ्य का रहस्य यही अमृत फल है। इसके परीक्षण के लिए अब वह स्वयं पथिक को अपने साथ क्रमशः दोनों भाइयों के घर ले गये। मंझले भाई की पत्नी ने अतिथि सत्कार के नाम पर बड़ी कठोर वाणी में अपने पति को फटकारा। क्या रोज-रोज अतिथियों को यहाँ लाने का बखेड़ा बना रखा है। यह क्या कोई धर्मशाला है? अब बड़ा भाई पथिक को चुपके से अपने सबसे छोटे भाई के यहाँ ले गया जो छोटे अवश्य थे किन्तु शरीर से सबसे अधिक वृद्ध दिखाई देते थे। भाई की पत्नी ने तो अतिथि का नाम सुनते ही बर्तन ही उठाकर पति के सिर पर दे मारा। पथिक तुरन्त बाहर निकला और सबसे बड़े भाई को धन्यवाद देता यह कहता आगे बढ़ गया भाई मुझे अमृत फल का पता लग गया है।

पत्नी के हृदय की गहराई से निकली रसभरी शान्तिदायिनी वाणी पति के सकल भय और ग्लानि को दूर कर उसे नई चेतना और जीवन शक्ति देती है। अतः वही वास्तव में अमृत फल है।

साभार- हितोपदेशक

समाचार

श्रद्धा पूर्वक मनाया श्रावणी पर्व, बदले यज्ञोपवीत

आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर की ओर से ११ अगस्त २०२२ को श्रावणी पर्व रक्षाबंधन पर यज्ञ अनुष्ठान के साथ नये यज्ञोपवीत (जनेऊ) धारण करवाये गये। यह जानकारी देते हुए आर्य समाज के

प्रधान श्री भँवर लाल आर्य ने बताया कि प्रातः ८ बजे पं. रामदयाल के पौरोहित्य में यज्ञ हवन हुआ। यज्ञ में सर्वश्री डॉ. अमृत लाल तापड़िया, विमला तापड़िया, कैप्टन संदीप सूद, ऋतु सूद, बलराम चौहान, नूतन चौहान, कृष्ण कुमार सोनी, अम्बालाल सनाढ्य आदि ने यजमान बन कर आहुतियाँ दीं। यज्ञोपरान्त वैदिक विद्वान् आचार्य वेदमित्र आर्य ने श्रावणी पर्व की महत्ता बताते हुए कहा कि इसका सम्बन्ध वेद के अध्यापन एवं अध्ययन करने वालों से है। वेद के अध्ययन के मार्ग को महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्रशस्त किया, साथ ही यज्ञोपवीत के महत्व, श्रावणी पर्व रक्षाबन्धन पर विचार व्यक्त किये। श्रीमती राधा त्रिवेदी, सरला गुप्ता ने भजन प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन मंत्री श्रीमती ललिता मेहरा ने किया।

– भँवर लाल आर्य-प्रधान, चलभाष- ६४१३८६३५६४

आर्य समाज का श्रावणी उपाकर्म समारोह एवं आर्य संन्यासी स्वामी मेधानन्द सरस्वती का अभिनन्दन एवं विदाई

निम्बाहेड़ा, शान्तिनगर स्थित आर्य समाज मन्दिर में चल रहे श्रावणी उपाकर्म पर्व का समापन समारोह पातंजलि योग धाम, ज्वालापुर-हरिद्वार के अध्यक्ष आर्य संन्यासी स्वामी मेधानन्द सरस्वती के सान्निध्य में मनाया गया।

साप्ताहिक श्रावणी उपाकर्म के समापन पर आयोजित विशेष यज्ञ के उपरान्त नये यज्ञोपवीत धारण करवाये गये एवं हैदराबाद सत्याग्रह के शहीदों को याद कर श्रद्धांजलि दी गई। आयोजित सत्संग समारोह को सम्बोधित करते हुए स्वामी मेधानन्द सरस्वती ने अपने उद्बोधन में कहा कि जो वेदमार्ग का पालन नही करता, सदाचार का पालन नही करता, जो आलसी का जीवन जीता है और जो भोजन की शुद्धि पर ध्यान नहीं देता उसकी उम्र घट जाती है।

ज्ञातव्य है कि स्वामी मेधानन्द सरस्वती निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, छोटीसादड़ी, प्रतापगढ़, रतलाम, मन्दसौर, नीमच आदि आर्य समाजों एवं विभिन्न धार्मिक संस्थाओं में योग, अध्यात्म, गोरक्षा व राष्ट्ररक्षा की अलख जगाने के लिए विगत १५ दिनों से इस क्षेत्र के प्रवास पर आये हुए थे।

इस अवसर पर आर्य समाज के पदाधिकारी चेतन मिश्रा, रतन लाल राजोरा, शिवलाल आंजना, डॉ. अर्जुनलाल कटारिया, राधेश्याम धाकड़, सत्यनारायण शारदा, भरत आर्य एवं महिला आर्य समाज की उपप्रधान ललिता साहू द्वारा आर्य संन्यासी स्वामी मेधानन्द सरस्वती का शॉल व श्रीफल भेंटकर अभिनन्दन किया गया व उनके आगमन को समाज के लिए उपयोगी करार दिया। महिला बच्चों आदि सभी ने संन्यासी जी को भावभीनी विदाई दी।

कार्यक्रम का संचालन व आगन्तुकों का स्वागत एवं आभार शिक्षाविद् मोहनलाल आर्यपुष्प ने किया।

– राधेश्याम धाकड़

आर्य समाज मुम्बई की ओर से महर्षि पाणिनि कन्या वेद पाठशाला की ब्रह्मचारिणियों का उपनयन और वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित विश्व की प्रथम आर्य समाज, काकड़वाड़ी, मुम्बई एवं दक्षिण भारत और महाराष्ट्र की प्रथम आर्य समाज फाउण्डेशन द्वारा संचालित महर्षि पाणिनि कन्या वेद पाठशाला संभाजी नगर, औरंगाबाद, जहाँ चारों वेदों का सस्वर वेदपाठ और आर्ष ग्रन्थों की व्याकरण के साथ शिक्षा दी जाती है, जो कि पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी, काशी का विस्तार केन्द्र है, आर्य समाज, मुम्बई में दिनांक ११ अगस्त २०२२ को सुबह ६.३० से १२.०० बजे तक ब्रह्मचारिणियों का उपनयन और वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न करवाया गया।

इस कार्यक्रम का सम्पूर्ण आयोजन आर्य समाज, मुम्बई के मैनेजिंग ट्रस्टी डॉ. अश्विनी भाई पटेल-प्रधान, देश बन्धु शर्मा-मंत्री, विजयकुमार गौतम ने किया और संस्कार का पौरोहित्य चतुर्वेदी आचार्या नंदिता शास्त्री ने किया। मंच का संचालन वैदिक विद्वान् पंडित धर्मपाल शास्त्री, पंडित योगेश, पंडित रमेश, पंडित सुरेश शास्त्री, पंडित महेन्द्र शास्त्री के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

आर्य जगत् के विद्वान् और वैद्य पंडित विज्ञान मुनि जी ने उपस्थित

रहकर आशीर्वाद दिया। आर्य समाज फाउण्डेशन द्वारा संचालित इस कन्या गुरुकुल का अधिक से अधिक सहयोग कर महर्षि दयानन्द सरस्वती का सपना स्त्रियों को भी वैदिक शिक्षा मिले पूरा करने का आह्वान किया। इस कार्यक्रम हेतु कन्या गुरुकुल के अध्यक्ष आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता डॉ. लक्ष्मण माने, अध्यापक मुकेश पाठक शास्त्री, संरक्षिका काजल दीदी एवं मंत्राणी अंजू माने ने प्रयास किया।

यह जानकारी आर्य समाज मुम्बई के मंत्री विजय गौतम जी ने प्रसिद्धि पत्रक से दी है।

– विजय गौतम, आर्य समाज-मुम्बई

आर्य समाज कृष्णपोल बाजार,जयपुर में एक दिवसीय श्रावणी पर्व का आयोजन

दिनांक १४ अगस्त २०२२, रविवार को आर्य समाज कृष्णपोल बाजार, जयपुर में एक दिवसीय श्रावणी पर्व का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि-स्वामी आर्यवेश जी; सार्वदेशिक सभा; नई दिल्ली, प्रमुख अतिथि-श्री अशोक परनामी जी; पूर्व प्रदेशाध्यक्ष-भाजपा, विशिष्ट आमंत्रित-स्वामी आदित्यवेश जी; प्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्; हरियाणा एवं जीववर्द्धन शास्त्री; महर्षि दयानन्द सेवा आश्रम; बांसवाड़ा, विशिष्ट अतिथि-श्री एम.एल.गोयल, श्री विरजानन्द आर्य थे। यज्ञ के ब्रह्मा पंडित जानकी प्रसाद शर्मा थे। वैदिक प्रवक्ता डॉ. मुरारी लाल पारीक ने सारगर्भित प्रवचन से सबको लाभान्वित किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम के संयोजक श्री ओ.पी.वर्मा पूर्व प्रधान-आर्य समाज; कृष्णपोल बाजार; जयपुर एवं प्रधान-दयानन्द बाल सदन; अजमेर रहे। भजनोपदेशक श्री जीतेन्द्र आर्य एवं श्री कमलेश शर्मा ने सुमधुर भजन प्रस्तुत किए।

– कोशलाधीश मिश्र, मंत्री

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में आजादी के अमृत महोत्सव के तहत कार्यक्रम सम्पन्न

स्वतंत्रता दिवस के इस अवसर पर आजादी के अमृत महोत्सव के तहत कार्यक्रमों की शृंखला के अन्तर्गत गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में तिरंगा यात्रा रैली का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के

कुलपति प्रो. रूपकिशोर शास्त्री ने दयानन्द द्वार पर स्थित टेंक से तिरंगा यात्रा रैली को झण्डी दिखाकर रवाना किया। इस मौके पर कुलपति प्रो. रूपकिशोर शास्त्री ने कहा कि आजादी की लड़ाई में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की भूमिका आजादी की अलख जगाने वाली रही, साथ ही पराधीनता के समय में गुरुकुल की यह पुण्यभूमि क्रान्तिकारी गतिविधियों का बड़ा केन्द्र रही। तिरंगा यात्रा रैली दयानन्द द्वार से आरम्भ होकर सिंह द्वार होते हुए दयानन्द स्टेडियम पहुँची। यहाँ कुलपति प्रो. रूपकिशोर शास्त्री ने राष्ट्रध्वज फहराया।

अमृत महोत्सव के इस अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी वि.वि. के संग्रहालय में आजादी के अमृत महोत्सव पर विभाजन की विभीषिका स्मरण दिवस प्रदर्शनी भी लगाई गई। इस प्रदर्शनी में उस समय की घटित क्रूरता दर्शाया गया साथ ही प्रदर्शनी देश के उन असंख्य गुमनाम शहीदों को श्रद्धांजलि देने वाली रही जिन्होंने देश की आजादी की लड़ाई के बाद बंटवारे के नाम पर हुई हिंसा में सब कुछ न्यौछावर कर दिया। कुलपति प्रो. रूपकिशोर शास्त्री ने कहा कि प्रदर्शनी से देश के शहीदों को नमन कर उनके सपनों के भारत के निर्माण को पूरा करने का संकल्प लें।

रक्षाबन्धन त्योहार अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

रक्षाबन्धन एवं आजादी का ७५वें अमृत महोत्सव के शुभावसर पर दयानन्द सेवाश्रम संघ, बोकाजान के प्रांगण में वरिष्ठ गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति में रक्षाबन्धन त्योहार अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। जहाँ १५५ बटालियन सी.आर.पी.एफ. बोकाजान के कमान्डेन्ट ऑफिसर्स-श्री अविनाश शरण जी, श्री सुभाष चन्द जी एवं श्री मीणा जी, डिप्टी कमान्डेन्ट ऑफिसर्स- श्री सुखविंदर सिंह, श्री संतोष कुमार, श्री कमल आचार्य, असिस्टेंट कमान्डेन्ट ऑफिसर सहित ५० जवानों की उपस्थिति में आश्रमवासियों ने मिलकर अत्यन्त

हर्षोल्लास के साथ मनाया। जिसमें सर्वप्रथम देवयज्ञ किया गया तत्पश्चात् आश्रम की छात्राओं ने जवानों को रक्षासूत्र (राखी) बांधकर अपने जवान भाईयों से आशीर्वाद लिया। जवानों ने उन्हें भूरि-भूरि आशीर्वाद प्रदान किया और उपहारस्वरूप कुछ वस्त्र भेंट किए। सभी जवानों ने संकल्प लिया कि वे आजीवन उनकी तथा सम्पूर्ण भारत की रक्षा तथा सेवा करते रहेंगे।

आर्य समाज में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व मनाया

आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर की ओर से १६ अगस्त २०२२ को श्री कृष्ण जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर प्रातः कालीन यज्ञ एवं भजन का कार्यक्रम संपन्न हुआ। मुख्य अतिथि श्री अशोक आर्य (अध्यक्ष-श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास) ने श्रीकृष्ण जी के जीवन पर अपने उद्‌बोधन में कहा कि- भगवान श्रीकृष्ण योगियों में भी श्रेष्ठतम योगी, अद्‌भुत राजनीतिज्ञ, कूटनीति में निपुण, ब्रह्मचारी, एकपत्नी व्रती, वेदों के ज्ञाता, मलयुद्ध में निपुण, अत्यन्त पराक्रमी योद्धा, निष्कलंक जीवन जीने वाले धर्मात्मा महापुरुष थे। लेकिन उनके जीवन में अनेक चमत्कारी घटनाएँ जोड़कर उन्हें माखनचोर, रास रचैया आदि नाम देकर उनके साथ न्याय नहीं किया गया।

श्री कृष्ण कुमार सोनी, श्रीमती सरला गुप्ता एवं श्री राम दयाल मेहरा आदि ने श्रीकृष्ण के जीवन के सम्बन्धी भजन-गीत प्रस्तुत किए।

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०४/२२ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०४/२२ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री रतनलाल राजौरा, निम्बाहेड़ा (राज.), श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्रीमती सुनीता सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती रूपा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्री प्रधान जी आर्यसमाज; बीकानेर (राज.), श्रीमती उषा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री हर्षवर्धन आर्य; नवादा (बिहार), श्रीमती सुप्रिया चावला; जालन्धर (पंजाब), श्रीमती कंचन देवी; बीकानेर (राज.), डॉ. राजबाला कादियान; करनाल (हरियाणा), श्री हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री गणेशदत्त गोयल; बुलन्दशहर (उ.प्र.), श्री आर.सी. आर्य; कोटा (राज.), श्री नन्दलाल जी आर्य; बेतिया (बिहार), डॉ. महेश कुमार गुप्ता; भरतपुर (राज.)।

सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य– पहेली के नियम पृष्ठ 25 पर अवश्य पढ़ें।

सत्यार्थ-पीयूष

ईश्वर और ईश्वरकृत पुस्तक (कसौटी)

यजुर्वेद २३/०४ में अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका तीनों नामों को एक साथ देखकर कह दिया जाता है कि महाभारत वाली तीनों काशीराज की राजकुमारियों का यहाँ वर्णन है जिन्हें भीष्म उठा लाये थे। परन्तु यहाँ उन्हें काम्पीलवासिनी बताया गया है। बताइये काशी निवासिनी काम्पील क्योंकर हुई? वस्तुतः यहाँ इतिहास है नहीं। यहाँ अम्बा, अम्बिका तथा अम्बालिका माता, दादी और परदादी के वाचक हैं।

अतएव महर्षि दयानन्द की स्थापना पूर्ण सत्य है कि वेदों में लौकिक इतिहास का लेश भी नहीं है।

शबर स्वामी भी लिखते हैं कि 'अगर वेद में इतिहास माना गया तो वेद का सादि और अनित्य माना जायेगा। निरुक्त की टीका में स्कन्द स्वामी लिखते हैं कि आख्यानों के 'नित्य पदार्थ' परक अर्थ करने चाहिए।

(ग) ईश्वरीय ज्ञान पूर्ण, सर्वकालिक तथा सार्वभौम होता है क्योंकि वह सर्वज्ञ प्रभु का ज्ञान है। अतः एक बार ईश्वरीय ज्ञान के प्रकाश के पश्चात् वह सर्वदा सदैव वैसा ही रहना चाहिए उसमें लेश मात्र भी परिवर्तन, जोड़ या घटना सम्भव नहीं क्योंकि आवश्यकता ही नहीं। ऐसी स्थिति वेद के साथ है, ईश्वरीय ज्ञान का दावा करने वाले अन्य ग्रन्थों के साथ नहीं। कुरानादि ग्रन्थों में स्वीकार किया गया है कि इससे पूर्व भी अल्लाह ने ज्ञान दिया था।

'हमने मूसा को किताब और मौजिजे दिये।'

– मं१/सि.१/सू.२/आ.५०

प्रश्न यह उठता है कि पूर्व में जब ईश्वर ने किसी के भी माध्यम से ज्ञान का प्रकाश कर दिया तो फिर दोबारा किसी अन्य पैगम्बर या विशिष्ट पुरुष को देने की क्या आवश्यकता आन पड़ी? क्या पहले वाले में कुछ रह गया था (अपूर्ण) जो अब दिया गया अथवा पहले वाले में कुछ असत्य, भ्रान्तिपूर्ण अथवा विपरित कह दिया गया था जिसे अब सुधारा गया अथवा पहले वाले ज्ञान में कुछ अनावश्यक था जिसे अब निकाल दिया गया? देखें-

'हम किसी आयत का हुक्म जो मौकूफ कर देते हैं या उस आयत को फरामोश कर देते हैं तो हम उस आयत से बेहतर या उस आयत की मिस्ल ही ला देते हैं।' २/१०६

ऐसी स्थिति ईश्वरीय ज्ञान के साथ कभी नहीं हो सकती।

स्मरण रखना चाहिए कि ईश्वर सर्वज्ञ है उसके ज्ञान में उपरोक्त एक भी न्यूनता नहीं रह सकती। हाँ! मनुष्य अल्पज्ञ है। उसकी रचना में उपरोक्त सभी संभावनाऐं हैं अतः वेदेतर अन्य ग्रन्थ मानव की रचनाऐं हैं। आश्चर्य तो तब होता है कि जब मुहम्मद साहब अपने स्वयं के ऊपर उतरने वाली पूर्व आयत को ही रद्द कर नयी आयत को प्रस्तुत कर कह देते हैं कि खुदा ने पूर्व की आयत को मनसूख कर नयी आयत प्रदान की है। इसके साथ यह भी आश्चर्य है इस ईश्वरीय ज्ञान के उतरने में ३३ वर्ष लग गये।

वेद के सन्दर्भ में ऐसा कुछ भी नहीं है। सृष्टि के आदि में वेद ज्ञान को चार ऋषियों की आत्मा में प्रकाश के पश्चात् अद्यतन बिन्दु मात्र भी परिवर्तन/परिवर्धन/संशोधन नहीं पाया जाता। न भविष्य में ऐसा होगा। वेद श्रुति परम्परा से ज्यों के त्यों आज भी विद्यमान हैं। इस विषय में प्रो. मैक्समूलर तक को लिखना पड़ा-

वेदों के पाठ हमारे पास इतने शुद्ध रूप से पहुँचे हैं कि सम्पूर्ण ऋग्वेद में न कोई पाठभेद या परिवर्तन है और न कोई स्वर में भेद है।' Origin of religion पृ. १३१।

(घ) ईश्वर एक है। अतएव उसका ज्ञान भी सम्पूर्ण मानव समाज के लिए होना चाहिए। सम्पूर्ण मानव समाज के लिए हितकारी होना चाहिए। किसी समूह विशेष या देश विशेष पर विशेष अनुग्रह का भाव व अन्य के लिए नाराजगी का भाव ईश्वरीय ज्ञान में नहीं हो सकता। बाइबल, कुरानादि इस कसौटी पर खरे नहीं उतरते। इनमें देश विशेष, समूह विशेष के प्रति स्पष्ट पक्षपात होने से प्रमाणित होता है कि इनकी रचना ऐसे मनुष्यों द्वारा कि गई है जो देश विशेष या समूह विशेष के सदस्य होने से केवल उन्हीं के हिताहित का ध्यान रखते थे।

परन्तु वेद के उपदेश मानव मात्र के लिए हैं। एक भी स्थल वेद में ऐसा नहीं है कि समूह विशेष या देश विशेष का ध्यान विशेष रखा गया हो। यह इकलौती विशेषता ही वेद को ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है। एकाध उदाहरण देखें-

ईश्वर किसी समुदाय विशेष का पक्षपाती नहीं। '......... परमात्मा अन्तर्यामी रूप से सब जीवों को सत्य का उपदेश करता हुआ आप्तों की और संसार की सदैव रक्षा करता है।'

– ऋग्वेद१/१/८ के महर्षि दयानन्द कृत भाष्य से

'हे जगदीश्वर! जिससे कि आप सर्व व्यापक होते हुए मनुष्यों और पशु आदि से सुख के इच्छुक हैं, इसलिये सबके द्वारा उपासना करने योग्य हैं। क्रमशः .....

– अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाब बाग

Festive Greetings
Dollar
Missy
CHIC CASUALS
CHURIDAR | ANKLE LENGTH | CAPRI
CARRY ON MISSY
CAPRI
CHURIDAR
ANKLE LENGTH
| www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 September-2022 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2021-2023

नामस्मरण की रीति .....नामस्मरण इस प्रकार करना चाहिये जैसे ''न्यायकारी'' ईश्वर का एक नाम है। इस नाम से जो इसका अर्थ है कि जैसे पक्षपात रहित होकर परमात्मा सब का यथावत् न्याय करता है, वैसे उसको ग्रहण कर न्याययुक्त व्यवहार सर्वदा करना अन्याय कभी न करना, इस प्रकार एक नाम से भी मनुष्य का कल्याण हो सकता है।

- सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास पृष्ठ ३०६

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर